राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें

पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023

संपर्क नं.-7490923915

ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उतराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रकाशित

सुरत–गुजरात,संस्करण गुरुवार 03 अक्टूबर 2024 वर्ष–7,अंक–251 पृष्ठ–08 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

राष्ट्रपति मुर्मू, पीएम मोदी एवं राहुल गांधी समेत कई दिग्गज नेताओं ने महात्मा गांधी को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली ।

आज पूरा देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती मना रहा है। उनकी याद में आयोजित कार्यक्रमों में उन्हें याद किया जा रहा है और आदर्शों पर चर्चा हो रही है। बुधवार की सुबह राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,लोकसभा में नेताप्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई दिग्गज नेताओं ने बापू को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उन्हें याद किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी समेत तमाम नेताओं ने राजघाट जाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

पीएम ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का योगदान कभी नहीं भूला जा सकता।

पीएम ने एक्स पर लिखा कि पूज्य बापू का जीवन और सत्य, सद्भाव और समानता पर आधारित आदर्श हमेशा देश के लोगों के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन किया और दुनिया भर के राजनेताओं और कार्यकर्ताओं की

पीढ़ियों को प्रेरित किया। पीएम मोदी ने भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को भी श्रद्धांजलि दी, जिनका जन्म भी इसी दिन हुआ था। मोदी ने शास्त्री के बारे में कहा कि उन्होंने अपना

जीवन देश के सैनिकों, किसानों और गौरव के लिए समर्पित कर दिया, जिन्होंने जय जवान, जय किसान का नारा दिया और उनकी सादगी और ईमानदारी ने उन्हें व्यापक सम्मान दिलाया।

साहिबगंज में एनटीपीसी एमजीआर रेलवे ट्रैक को बम से उड़ाया

साहिबगंज । साहिबगंज में एनटीपीसी एमजीआर रेलवे ट्रैक को बदमाशों ने बम से उड़ा दिया है। इसमें ट्रैक का 470 सेंटीमीटर टुकड़ा क्षतिग्रस्त हो गया है। ब्लास्ट इतना जोरदार था कि रेलवे ट्रैक का हिस्सा 39 मीटर दूरी जा गिरा। ब्लास्ट के बाद ट्रैक में 770 सेंटीमीटर का गैप आ गया। वहीं 3 फीट गहरा गड्ढा हुआ है। मौके पर रेलवे और पुलिस के बड़े अधिकारी पहुंचे हुए हैं। घटना लगभग रात के 12 बजे की है। घटना के बाद कोयला लोड गाड़ी पोल संख्या42/2 के पास खड़ी है। वहीं घटना के संबंध में रेलवे नाइट गार्ड जीतेंद्र कुमार शाह ने बताया कि मेरी ड्यूटी इसी लाइन में शाम चार बजे से रात 12 बजे तक रहती है। मैं ड्यूटी में ही था। कई बार की जांच के दौरान में रात 10 बजे तक लाइन में किसी तरह की कोई हलचल नहीं थी। रात 12 बजे के करीब धमाके जैसी आवाज आई। हालांकि इस लाइन में पहले कभी इस तरह की घटना नहीं हुई तब लगा कि टायर फटा होगा। मेरी ही लाइन में घटना घटी इसका पता नहीं चल सका। ड्यूटी खत्म कर मैं घर चला गया। सुबह फोन पर जानकारी मिली की ऐसी घटना हुई है।

विलय के बाद 'विस्तारा की उड़ानों के नंबरों की शुरुआत 'एआई2' से

एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया ने दी जानकारी

नई दिल्ली । एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया ने कहा कि अगले माह विलय के बाद 'विस्तारा' के विमानों से संचालित उड़ानों के नंबरों की शुरुआत 'एआई2' से होगी। कंपनी ने बताया कि विस्तारा के विमान, चालक दल और सेवाएं पहले की तरह ही परिचालन में रहेंगी। टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन ने बताया कि विलय के बाद भी विस्तारा का अनुभव बरकरार रहेगा। टाटा समूह और सिंगापुर एयरलाइंस के संयुक्त उपक्रम विस्तारा का एयर इंडिया से विलय 12 नवंबर को होगा। यह एयर इंडिया एक्सप्रेस के साथ एआईएक्स कनेक्ट के विलय के बाद भारतीय विमानन क्षेत्र में एक बड़ा सौदा होगा। कुछ लोगों में चिंता है कि क्या विस्तारा के यात्रियों को विलय के बाद भी अभी जैसी ही सेवाएं मिलती रहेंगी, क्योंकि परिवर्तन के दौर से गुजर रही एयर इंडिया को हाल के दिनों में कुछ सेवा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। एयर इंडिया के प्रवक्ता ने कहा कि एयर इंडिया और विस्तारा की टीमें सुनिश्चित करने के लिए एक साल से अधिक समय से कड़ी मेहनत कर रही हैं कि इनका विलय ग्राहकों और कर्मचारियों दोनों के लिए सहज और लाभप्रद हो।

मणिपुर में नगा समुदाय के दो पक्षों के बीच गोलीबारी.....3 लोगों की मौत

नई दिल्ली । मणिपुर के उखरुल जिले में नगा समुदाय के दो पक्षों के बीच गोलीबारी हुई। इसमें 3 लोगों की मौत हुई और 10 से ज्यादा घायल हैं। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 163, 2023 की उप-धारा 1 के तहत इलाके में निषेधाज्ञा लागू कर दी है। अगले आदेश तक लोगों के घरों से निकलने पर रोक है। पुलिस ने बताया कि दोनों पक्ष नगा समुदाय के हैं, लेकिन हुनफुन और हंगपुंग नाम के दो अलग-अलग गांव हैं। दोनों पक्ष एक ही जमीन पर दावा करते हैं। स्वच्छता अभियान के तहत विवादित जमीन की सफाई को लेकर दोनों गुटों के बीच हिंसा हुई। इलाके में असम राइफल्स को तैनात किया गया है। दूसरी तरफ, चुराचांदपुर जिले के लीशांग गांव के पास अज्ञात लोगों ने एक प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन के टाउन कमांडर की गोली मारकर हत्या कर दी। मृतक की पहचान जिले के कपरंग गांव के निवासी सेखोहाओ हाओकिप के रूप में की गई।

भारत का रुख स्पष्ट कहा- इजराइल को जवाबी हमला करने का पूरा अधिकार

नई दिल्ली। बीती रात ईरान ने इजरायल पर 100 से अधिक बैलेस्टिक मिसाइलें दाग दीं। इससे पूरी दुनिया में हलचल मच गई। इस हमले पर अमेरिका सहित कई देशों ने अपनी प्रतिक्रियाएं दी है। भारत ने भी अपना रुख स्पष्ट करते हुए साफ कर दिया कि भारत इजराइल के साथ है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि बीते साल सात अक्तूबर को हमास के द्वारा इजराइल पर किए गए ड्रोन हमलों को भारत आतंकी हमला मानता है। उन्होंने यह भी कहा कि इजराइल को जवाबी हमले करने का पूरा अधिकार है। हालांकि, उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानूनों को ध्यान में रखने की नसीहत दी है। उन्होंने कहा है कि दो देशों की लड़ाई में वहां के नागरिकों को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए। जयशंकर ने यह भी कहा कि मुश्किल समय में संचार के महत्व को कम मत समझना चाहिए। अगर कुछ बातें कही जानी हैं, आगे बढ़ाई जानी हैं और वापस भेजी जानी हैं, तो मुझे लगता है कि ये सभी योगदान हैं जो हम कर सकते हैं। हम इस दिशा में काम करते हैं। विदेश मंत्री ने ईरान के द्वारा इजराइल पर किए गए मिसाइल हमलों से पहले कहा था, हम 7 अक्टूबर के हमलों को आतंकी हमला मानते हैं। हम यह मानते हैं कि इजराइल के द्वारा जवाबी कार्रवाई करने की जरूरत थी। हालांकि किसी भी देश द्वारा दी जाने वाली प्रतिक्रिया में अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून को ध्यान में रखना चाहिए। नागरिकों को किसी भी तरह के नुकसान या प्रतिकूल प्रभाव के बारे में सावधान रहना चाहिए।

सही दिशा में किया गया प्रयास सही परिणाम देता है: पीएम मोदी

झारखंड में किया 83 हजार 300 करोड़ की योजनाओं का शिलान्यास

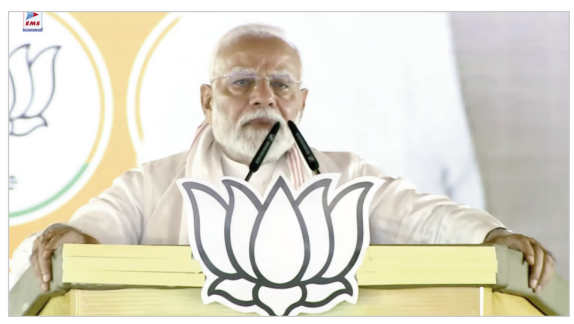

रांची।

पीएम नरेंद्र मोदी बुधवार को झारखंड पहुंचे। हजारीबाग में पीएम मोदी ने 83 हजार 300 करोड़ रुपए से ज्यादा की योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इस अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि आज जिन योजनाओं का शिलान्यास किया गया है, वह आदिवासियों के कल्याण से जुड़ी हुई हैं। आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती है, आदिवासी विकास के लिए उनका विजन हमारी पूंजी है। गांधीजी का मानना था कि देश का विकास तब ही हो सकता है, जब जनजातीय समाज का विकास हो।

पीएम मोदी ने आगे कहा कि सही दिशा में किया गया प्रयास सही परिणाम देता है। योजनाओं के शिलान्यास के साथ ही पीएम मोदी ने देश के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की शुरुआत की। इस अभियान पर 79 हजार 150 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। इसके बाद झारखंड बीजेपी की ओर से चलाए जा रहे परिवर्तन यात्रा का समापन किया।

पीएम मोदी गुरुवार को झारखंड दौरे पर पहले रांची के बिरसा एयरपोर्ट पहुंचे, वहां से सेना के हेलिकॉप्टर से हजारीबाग के लिए रवाना हो गए। पीएम मोदी ने देश के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की शुरुआत की। इस अभियान पर 79 हजार 150 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे।

बता दें कि पीएम मोदी का पिछले 17 दिनों में झारखंड का यह दूसरा दौरा है। इससे पहले 14 सितंबर को पीएम जमशेदपुर आए थे। इसी साल झारखंड में विधानसभा चुनाव होने हैं। हजारीबाग में परिवर्तन महासभा में पीएम मोदी शामिल होंगे। फिलहाल झारखंड चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे समेत कई बड़े नेता मंच पर मौजूद थे।

स्वच्छ भारत मिशन की कामयाबी.....पीएम मोदी बधाई के पात्र : बिल गेट्स

माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक ने वीडियो संदेश जारी किया

नई दिल्ली ।

माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स ने महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत दिवस पर वीडियो संदेश जारी किया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू स्वच्छ भारत मिशन की प्रशंसा की। वीडियो संदेश में गेट्स ने कहा,बापू की जयंती पर मनाए जाने वाले स्वच्छ भारत दिवस पर लोगों को बधाई। पीएम मोदी के नेतृत्व में स्वच्छ भारत मिशन को एक दशक पहले पूरे देश में खुले में शौच को खत्म करने के लक्ष्य के साथ शुरू किया था। तब से, भारत ने स्वच्छता और सफाई में सुधार के लिए बहुत बड़ी प्रगति की है। इसमें लाखों शौचालय स्थापित किए हैं। जिससे 10 लाख लोगों के लिए सुरक्षित स्वच्छता सुनिश्चित हुई है। उन्होंने कहा, मिशन की सफलता बड़े पैमाने पर सार्थक बदलाव लाने की भारत की क्षमता का प्रमाण है। अद्भुत प्रगति के लिए एक बार फिर बधाई। बता दें कि स्वच्छ भारत अभियान के 10 साल 2 अक्टूबर 2024 को पूरे हो गए हैं। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी लोगों का धन्यवाद किया। पीएम मोदी ने देश की जनता को संबोधित कर कहा कि स्वच्छ भारत अभियान आज एक जन आंदोलन बन चुका है। स्वच्छता की सेवा में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, पूर्व राष्ट्रपति और पूर्व उपराष्ट्रपति ने भी योगदान दिया है, जिसने देश को एक बड़ी प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि पिछले पखवाड़े में देशभर में करोड़ों लोगों द्वारा स्वच्छता कार्यक्रमों में भाग लिया था। इस सेवा पखवाड़े के 15 दिनों में देश भर में 27 लाख से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 28 करोड़ से अधिक लोगों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि निरंतर प्रयास करके ही हम अपने भारत को स्वच्छ बना सकते हैं।

औराई में वायुसेना का हेलिकॉप्टर क्रैश, 3 जवान और 2 पायलट सुरक्षित

नई दिल्ली ।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के औराई में वायुसेना का हेलिकॉप्टर क्रैश होकर पानी में गिर गया। हेलिकॉप्टर में 3 जवान और 2 पायलट सवार थे, वे सभी सुरक्षित हैं। हेलिकॉप्टर सीतामढ़ी से बाढ़ राहत सामग्री लेकर जा रहा था। नेपाल में भारी बारिश से बिहार की कई नदियां उफान पर हैं। 16 जिलों की करीब 10 लाख आबादी बाढ़ से प्रभावित हुई है। पूर्णिया, सहरसा, सुपौल, दरभंगा में हालात बेहद खराब हैं। देश में मानसून सीजन अब खत्म होने वाला है। दक्षिण और पूर्वोत्तर के राज्यों को छोड़कर किसी राज्य में बारिश का अलर्ट नहीं है। दूसरी ओर राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में बारिश का दौर खत्म हो गया है। राजस्थान के कई जिलों में अधिकतम तापमान 36 डिग्री से ऊपर पहुंच गया है। मंगलवार को गंगानगर, फलोदी में सबसे ज्यादा 39.8 डिग्री तापमान दर्ज हुआ। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में मंगलवार को अधिकतम तापमान 37.2 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। रायपुर में दिन का तापमान 35.2 डिग्री रहा जो सामान्य से 2.8 डिग्री ज्यादा था।

मध्य प्रदेश का खजुराहो 36.8 डिग्री तापमान के साथ राज्य में सबसे गर्म रहा।

3500 सीढ़ियां नंगे पैर चढ़े तिरुपति मंदिर पहुंचे डिप्टी सीएम पवन कल्याण

तिरुपति ।

आंध्र प्रदेश के श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर (तिरुपति मंदिर) के प्रसादम (लड्डुओं) में जानवरों की चर्बी मामले में डिप्टी सीएम पवन कल्याण की 11 दिन की प्रायश्चित दीक्षा जारी है। इस बीच पवन ने प्रायश्चित के तहत 1 अक्टूबर से तीन दिनों के लिए तिरुपति मंदिर यात्रा पर हैं। वे 3 अक्टूबर तक चप्पल या जूता नहीं पहनने वाले है। उन्होंने 1 अक्टूबर की देर रात तिरुमाला पहुंचने के बाद तिरूपति के अलीपिरी के रास्ते करीब 3500 सीढ़ियां नंगे पैर चढ़ीं। फिर गायत्री निलयम गेस्ट हाउस में रात गुजारी। पवन बुधवार को श्रीवारा में तपस्या की दीक्षा लेने वाले है। वह 3 अक्टूबर को दीक्षा खत्म होने के बाद वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने वाले है।

बुधवार को पवन कल्याण की दोनों बेटियां भी तिरुपति पहुंची। छोटी बेटी पोलिना अंजनी कोनिडेला ने मंदिर जाने से पहले भगवान वेंकटेश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा की घोषणा पत्र पर साइन किए। मंदिर के नियमों के अनुसार, गैर-हिंदुओं और विदेशियों को

मंदिर में जाने से पहले देवता में विश्वास की घोषणा पर साइन करना होता है। पोलीना पवन कल्याण और उनकी तीसरी पत्नी अन्ना लेजनेवा की बेटी हैं। पोलीना और उनके अपने भाई मार्क प्रवासी भारतीय हैं। पवन कल्याण की पहली पत्नी रेनू देसाई से हुई बेटी आद्या भी पोलीना के साथ मंदिर गईं।

ईरान और इजराइल के बीच जंग के असर.....

.कई दिग्गज एयरलाइंस कंपनियों ने बदले रुट

नई दिल्ली ।

ईरान और इजराइल में तनाव बढ़ने का असर दुनियाभर में दिख रहा है। इस बीच विमानन क्षेत्र गहरा असर पड़ा है। मिडिल ईस्ट में जंग के बीच कई दिग्गज एयरलाइंस कंपनियों ने अपने रास्ता बदल लिया है या फिर सस्पेंड फ्लाइट्स की डेडलाइन को आगे बढ़ा दिया है। पहले इजराइल-फिलिस्तीन, फिर इजराइल और हिजबुल्लाह और अब इजराइल और ईरान के बीच संघर्ष ने लुफ्थांसा से लेकर अमीरात तक की उड़ानों को प्रभावित किया है। एअर इंडिया ने भी दोनों देशों के बीच बढ़ते संघर्ष पर चिंता जाहिर की है।

वहीं कई एयरलाइनों ने इजराइल और लेबनान के लिए अपनी उड़ानों के निलंबन को आगे बढ़ा दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, लुफ्थांसा, केएलएम, अमीरात और स्विस एयरलाइंस सहित टॉप एयरलाइनों ने इजराइल, ईरान और लेबनान के लिए अपनी उड़ानों के निलंबन की घोषणा की है। युद्ध बढ़ने की आशंका के चलते डच एयरलाइन केएलएम ने कहा है कि कंपनी ने क्षेत्र की नाजुक स्थिति को देखकर साल के अंत तक तेलअवीव के लिए अपनी सभी उड़ानें सस्पेंड कर दी हैं। रिपोर्ट में एयरलाइंस के प्रवक्ता ने हवाले से जानकारी दी गई है। बता दें कि अगस्त में केएलएम एयरलाइंस ने ऐलान किया था कि इजराइल के लिए सभी उड़ानें 26 अक्टूबर तक निलंबित की गई हैं, लेकिन अब इस डेडलाइन को बढ़ा दिया गया है।

वहीं जर्मन एयरलाइन लुफ्थांसा ने कहा कि वह 30 नवंबर तक बेरूत, 31 अक्टूबर तक तेल अवीव और 14 अक्टूबर तक तेहरान के लिए उड़ानें निलंबित कर रही है। इससे पहले दुबई की अमीरात एयरलाइंस ने गुरुवार की इराक, ईरान और जॉर्डन की उड़ानें कैंसिल की हैं और बेरूत की उड़ानों का निलंबन 8 अक्टूबर तक बढ़ाया है। कुवैत एयरलाइंस ने कुछ रूट्स को चेंज किया है, डेस्टिनेशन टाइमिंग पर असर पड़ा है। एयरलाइन ने कहा है कि यह जरूरी सुरक्षा उपायों के तहत किया गया फैसला है। ईरान एयर, इराकी एयरवेज, बहरीन स्थित गल्फ एयर और दोहा स्थित कतर एयरवेज ने भी अगली सूचना तक बेरूत के लिए सभी उड़ानें निलंबित कर दी हैं। वहीं एयर अरेबिया ने बेरूत के लिए अपनी सभी उड़ानें सस्पेंड कर दी हैं। फ्लाय दुबई ने अपनी दुबई-बेरूत उड़ान को 7 अक्टूबर तक के लिए रद्द कर दिया है। रॉयल जोडर्न ने मौजूदा स्थिति के बीच लेबनान की राजधानी के लिए उड़ानें निलंबित की हैं। आईटीए एयरलाइंस इटली ने तेल अवीव की उड़ानों के निलंबन को 31 अक्टूबर तक बढ़ा दिया है। ब्रिटिश एयरलाइन ने तेल अवीव की उड़ानों को 7 अक्टूबर तक रद्द कर दिया है। एयर फ्रांस ने भी घोषणा की कि उसकी पेरिस-तेल अवीव और पेरिस-बेरूत उड़ानें 8 अक्टूबर तक रद्द हैं। इस बीच भारत की एअर इंडिया ने कहा कि हम मिडिल ईस्ट में जारी संघर्ष पर बारीकी से निगाह रखे हुए हैं और सुरक्षा जोखिमों का मूल्यांकन जारी है। कंपनी ने कहा है कि चाहे वह मिडिल ईस्ट हो या फिर रूट नेटवर्क के अन्य हिस्से सुरक्षा के लिए जरूरी एडजस्टमेंट किया जाएगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

निर्मला के दामन पर वसूली का आरोप.....?

कोर्ट को दी गई शिकायत में कहा गया है कि निर्मला सीतारमण ने ईडी के जरिए जेपी नड्डा और कर्नाटक के प्रदेश अध्यक्ष नलीन कतील के लाभ के लिए हजारों करोड़ रुपये की उगाही करने में मदद की। निर्मला सीतारमण ने विभिन्न कॉरपोरेट्स, उनके सीईओ, एमडी आदि के यहां छापे मारने, जब्ती करने और गिरफ्तारियां करने के लिए ईडी की सेवाएं लीं। ईडी की छापेमारी के डर से कई कॉरपोरेट कंपनियों, उनके सीईओ, एमडी आदि के यहां छापेमारी, जब्ती और गिरफ्तारी का डर दिखाकर कई करोड़ रुपये के चुनावी बॉन्ड खरीदने के लिए मजबूर किया गया।

(लेखक- मुस्ताअली बोहरा)

--- चुनावी बॉन्ड से जबरन वसूली

-- सीबीआई-ईडी के बेजा उपयोग

सीबीआई, ईडी, इनकम टैक्स सहित अन्य ऐसी ही एजेंसियों के बेजा इस्तेमाल या दुरूपयोग के आरोप केन्द्र सरकार पर लगते रहे है। पिछले कुछ दशकों में और खासकर विधानसभा और लोकसभा चुनावों के कुछ पहले ये एजेंसियां सक्रिय होकर अपने टारगेट को जद में लेते रहीं हैं। इन एजेंसियों का निशाना अकसर विपक्ष के नेता और ऐसे ही कतिपय कारपोरेट कंपनियों के धनकुबेर रहे हैं। इस मामले में कई बार गैरभाजपाई राजनीति पार्टियों ने आवाज भी उठाई लेकिन ये आवाज दबकर रह गई। जब भी सीबीआई, ईडी या ऐसी ही एजेंसियों के दुरूपयोग की बात सामने आई तो इसे सियासी आरोप कहकर खारिज कर दिया गया। लेकिन इलेक्टोरेल बॉड के मामले और इसके बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सहित अन्य खिलाफ शिकायत दर्ज होने से अब सीबीआई-ईडी आदि पर लगने वाले आरोप कुछ हद तक सच्चे लगने लगे हैं। बेंगलुरु में चुने हुए प्रतिनिधियों के लिए नामित मैजिस्ट्रेट कोर्ट के आदेश के बाद इलेक्टोरल बॉन्ड के मुद्दे पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और प्रवर्तन निदेशालय के खिलाफ जबरन वसूली और आपराधिक साजिश के तहत एफआईआर दर्ज की गई है। हालांकि, इलेक्टोरल बॉन्ड वसूली मामले में वित्त मंत्री निर्मला सीतारण को राहत मिल गई है। कर्नाटक हाईकोर्ट ने उनके खिलाफ मामले में जांच पर 22 अक्टूबर तक रोक लगा दी है। कर्नाटक बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष नलीन कुमार कटील ने निचली अदालत के फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। इलेक्टोरल बॉन्ड वसूली मामले में नलीन कुमार कटील सह-आरोपी हैं। इसी मामले में केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण को मुख्य आरोपी बनाया गया है। उन पर आरोप है कि उन्होंने चुनावी बांड की आड़ में कुछ कंपनियों से जबरन वसूली की थी। बेंगलुरू की एक विशेष लोक अदालत ने चुनावी बॉन्ड के जरिए उगाही की शिकायत पर सुनवाई करते हुए वित्त मंत्री सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया था। जनाधिकार संघर्ष परिषद के सह-अध्यक्ष आदर्श अय्यर की याचिका पर सुनवाई के बाद ये एफआईआर दर्ज की गई। इससे पहले मार्च में स्थानीय पुलिस को शिकायत दी थी जिस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई थी। इस मामले में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष बीवाई विजेंद्र, बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नलीन कुमार कतील और पार्टी के अन्य पदाधिकारियों को भी आरोपी बनाया गया है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि सीतारमण ने ईडी अधिकारियों की सहायता और समर्थन के माध्यम से राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर दूसरों के लाभ के लिए हजारों करोड़ रुपये की जबरन वसूली की। उसने कहा कि चुनावी बॉन्ड की आड़ में पूरा जबरन वसूली का धंधा अलग-अलग स्तरों पर बीजेपी के अधिकारियों के साथ मिलकर चलाया गया।

कोर्ट को दी गई शिकायत में कहा गया है कि निर्मला सीतारमण ने ईडी के जरिए जेपी नड्डा और कर्नाटक के प्रदेश अध्यक्ष नलीन कतील के लाभ के लिए हजारों करोड़ रुपये की उगाही करने में मदद की। निर्मला सीतारमण ने विभिन्न कॉरपोरेट्स, उनके सीईओ, एमडी आदि के यहां छापे मारने, जब्ती करने और गिरफ्तारियां करने के लिए ईडी की सेवाएं लीं। ईडी की छापेमारी के डर से कई कॉरपोरेट कंपनियों, उनके सीईओ, एमडी आदि के यहां छापेमारी, जब्ती और गिरफ्तारी का डर दिखाकर कई करोड़ रुपये के चुनावी बॉन्ड खरीदने के लिए मजबूर किया गया। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि आरोपियों और संवैधानिक पदों पर बैठे कई अन्य लोगों, एमएनसी और टीएनसी कॉर्पोरेट कंपनियों के सीईओ और एमडी के साथ मिलकर चुनावी बांड की आड़ में जबरन वसूली की। शिकायत में 8,000 करोड़ रुपये से अधिक की रकम वसूलने का आरोप लगाया गया है।

शिकायत में एल्युमिनियम और कॉपर की दिग्गज कंपनी मेसर्स स्टरलाइट एंड मेसर्स वेदांता कंपनी का उदाहरण दिया गया है, जिन्होंने अप्रैल 2019, अगस्त 2022 और नवंबर 2023 के बीच 230.15 करोड़ रुपये इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए दिए। वहीं मेसर्स ऑरोबिंदो फार्मा ग्रुप ऑफ कंपनीज ने 5 जनवरी 2023, 2 जुलाई 2022, 15 नवंबर 2022 और 8 नवंबर 2023 के बीच 49.5 करोड़ रुपये दिए। ये शिकायत सीआरपीसी की धारा 156 (3) के तहत दर्ज कराई गई है। जुर्माने और जुर्माने रहित सात साल से कम की कैद की सजा वाले अपराध के लिए अतिरिक्त चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट, बेंगलुरु का कोर्ट निर्धारित है। इन अपराधों के लिए आईपीसी की धारा 384 (जबरन वसूली), 120बी (आपराधिक साजिश) के साथ आईपीसी की धारा 34 (एक मकसद के लिए कई लोगों की एकसाथ मिलकर की गई कार्रवाई) के तहत शिकायत दर्ज की गई है।

फरवरी में सर्वोच्च अदालत ने चुनावी बॉन्ड योजना को यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि यह संविधान के तहत सूचना के अधिकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनावी बॉण्ड योजना को असंवैधानिक और स्पष्ट रूप से मनमानी' करार देते हुए 15 फरवरी को एसबीआई को निर्देश दिया था कि वह 12 अप्रैल, 2019 से खरीदे गए बॉण्ड का पूरा विवरण निर्वाचन आयोग को सौंपे। न्यायालय ने आयोग को संबंधित विवरण 13 मार्च तक अपनी वेबसाइट पर प्रकाशित करने का भी निर्देश दिया था। इस मामले में वित्त मंत्री सीतारमण को मुख्य आरोपी बनाया गया है। वहीं ईडी के अधिकारियों को दूसरे आरोपी के रूप में नामित किया गया है, इसके अलावा तीसरे आरोपी केंद्रीय कार्यालय के पदाधिकारी हैं। एफआईआर में चैथे नंबर पर कर्नाटक बीजेपी के पूर्व सांसद नलिन कुमार कतील का नाम है। बीजेपी अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र भी मामले में पांचवें आरोपी हैं। छठे आरोपी के तौर पर प्रदेश बीजेपी पदाधिकारियों का नाम हैं। कुल मिलाकर, मामला अब न्यायालय में है। कर्नाटक हाईकोर्ट ने भले ही दर्ज एफआईआर पर आगे की जांच के लिए रोक लगा दी हो लेकिन अब सियासत तेज हो गई है। मामला सीधे वित्त मंत्री से जुड़ा है और आरोपों की जद में सीबीआई-ईडी भी है लिहाजा विपक्षी दलों को केन्द्र सरकार को घेरने का मौका मिल गया है। विपक्षी पार्टियों के आक्रमण की तलवार की धार जो कुछ कुंद हो गई थी वो इस मामले से धारदार तो हो ही जाएगी।

संपादकीय

बुलडोजर और न्याय

देश भर में 'बुलडोजर कार्रवाई' को लेकर जारी बहस के बीच 'जमीयत उलेमा-ए-हिंद' की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अपना फैसला तो सुरक्षित रख लिया, मगर मामले की सुनवाई के दौरान की गई उसकी टिप्पणियां कुछ कम मानीखेज नहीं हैं। अदालत ने न सिर्फ यह कहा कि किसी के आरोपी होने या दोषी करार दिए जाने पर भी उसकी संपत्ति को ध्वस्त नहीं किया जा सकता, बल्कि अंतिम आदेश तक ऐसी कार्रवाइयों पर रोक लगाते हुए उसने यह भी साफ किया कि किसी अतिक्रमण को गिराए जाने से पहले संबंधित पक्ष को नोटिस दिया जाना चाहिए और इसके दस्तावेजी सुबूत भी होने चाहिए। यानी लक्षित संपत्ति पर नोटिस चिपकाने के साथ रजिस्टर्ड डाक से भी इसे भेजा जाना चाहिए। न्यायमूर्ति बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की खंडपीठ ने अपने अंतिम फैसले में बुलडोजर कार्रवाई पर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी करने के साफ संकेत दिए हैं। उम्मीद है, इसके बाद किसी किस्म की गफलत या बदनीयती के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। इसमें कोई दोराय नहीं कि देश में सार्वजनिक स्थलों के अतिक्रमण और उन पर अवैध निर्माण की बेशुमार घटनाएं हैं और अदालत ने इस मामले में राज्य प्रशासन को कानून-सम्मत कदम उठाने और ऐसी जगहों को खाली कराने की छूट पहले ही दे रखी है। मगर विडंबना यह है कि बुलडोजर कार्रवाई को जिस तरह पिछले कुछ महीनों व वर्षों में कानून-व्यवस्था के पर्याय के तौर पर पेश किया गया और एक खास समुदाय के खिलाफ हुई कार्रवाइयों पर गैर-जिम्मेदाराना सियासत की गई, उससे देश-दुनिया में यही संदेश गया कि अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाया जा रहा है और ऐसे में, जायज कार्रवाइयां भी संदेह के घेरे में आ गईं। शीर्ष अदालत ने उचित ही यह स्पष्ट किया है कि हम एक धर्मनिरपेक्ष देश हैं और यहां पर आपराधिक कानून धर्म से प्रेरित नहीं हो सकते। अवैध निर्माण चाहे जिस भी धर्म से वाबस्ता हो, उसे हटाया ही जाना चाहिए। किसी भी अवैध निर्माण को गिराने की एक तय प्रक्रिया होती है, जिसके तहत कार्रवाइयां रसूखदार लोगों के विरुद्ध भी हुई हैं। नोएडा में ट्विन टावर को गिराए जाने की बात बहुत पुरानी नहीं है। मगर किसी व्यक्ति के आपराधिक कृत्य की सजा पूरे परिवार को देना नैसर्गिक न्याय के विपरीत है। इसलिए शीर्ष अदालत ने यह संकेत किया है कि प्रशासन ने अवैध तोड़-फोड़ की कार्रवाई की, तो पीड़ित को संपत्ति वापस करनी पड़ेगी। अगर रोडमैप में यह बात स्पष्टता से सामने आई, तो आइंदा अधिकारी व सत्तारूढ़ राजनेता फौरन बुलडोजर निकालने से पहले कई बार सोचेंगे। ऐसे मामलों में जिम्मेदारी तय करने की पुख्ता व्यवस्था होनी ही चाहिए। न्यायप्रिय व्यवस्थाओं में कानून नागरिकों के संरक्षण के लिए होते हैं। जब किसी का घर या कोई अन्य स्थायी निर्माण गिराया जाता है, तब उससे न सिर्फ उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है, बल्कि उसकी सामाजिक क्षति भी होती है। एक बहुलवादी समाज में इससे दीर्घकालिक विलगाव पैदा होता है। हिमाचल की घटना एक ताजा मिसाल है। वहां एक मस्जिद में अवैध निर्माण को लेकर सांप्रदायिक तनाव गहरा उठा था, जबकि यह काम वहां के स्थानीय निकाय का था, जिसने उस अवैध निर्माण के प्रति लापरवाही बरती। यह सुखद है कि मस्जिद प्रबंधन ने खुद उस निर्माण को हटा लेने का एलान किया और हालात सामान्य हुए। उम्मीद है, सुप्रीम कोर्ट का निर्णायक फैसला आने के बाद बुलडोजर की राजनीति पर लगाम लगेगी और प्रशासनिक जवाबदेही भी सुनिश्चित हो सकेगी।

नवरात्र पर्व मातृशक्ति सम्मान व शक्ति उपासना का पर्व

लेखाराम बिश्नोई
लेखक विचारक

देवभूमि भारत में मातृशक्ति के प्रति आस्था आदिकाल से व अत्यंत प्राचीन है। भारत में पूर्व पाषाण काल और नवपाषाण काल में मातृ शक्ति उपासना के संकेत मिलते हैं। इतिहासविदो के अनुसार नवपाषाण काल में कृषि क्रांति के साथ न केवल सांस्कृतिक प्रगति हुई वरन समाज में नारियों का स्थान और धर्म में मातृशक्ति सिद्धांत का महत्व बढ़ा। परंतु कांस्य-काल में सभ्यता के उदय के साथ ही प्राचीन भारत में शक्ति उपासना को, शक्ति को अत्यंत लोकप्रियता मिलीं। अन्य देशों में भी शक्ति के प्रति आस्था के प्रमाण मिलते हैं। महाशक्ति देवी भगवती की उपासना के यह नौ दिन परंपरा निर्वहन के गहरे अर्थ लिए हैं। माना जाता है कि देवी जीवन की जड़ता को दूर करती है। हमारे जीवन में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषमता को दूर कर समाज और जीवन दोनों में संतुलन स्थापित करती है। जीवन में सुख, समृद्धि और समझ की नींव रखती है। यह पावन दिन परिवार, समाज और देश को संस्कारवान और संवेदनशील बनाने का संदेश देते हैं। स्त्री को शक्तिरूपा, ज्ञानरूपा और मातृ रूपा, हर रूप में स्वीकार्यता दिलाने का पर्व है। नौ दिन तक चलने वाली मां शक्ति की आराधना केवल धार्मिक कर्मकांड भर नहीं है। यह समय तो नकारात्मक वृत्तियों से दूर हो खुद को परिष्कृत करने का है। सही और गलत का बोध कराने वाले इन पावन नौ दिनों में नारी शक्ति की दिव्यता का पूजन किया जाता है। दुर्गा पूजा पर्व नारी के सम्मान, सामर्थ्य और स्वाभिमान की सार्वजनिक स्वीकृक्ति का पर्व है। इसमें नारी की मातृ शक्ति की उपासना सबसे ऊपर है। उसका मान का सर्वोच्च दर्जा जो एक स्त्री को जीवनदात्री के रूप में मिलता है। यह पर्व स्त्रीत्व के हर रंग के साथ ही शक्तिस्वरूपा मां दुर्गा की आराधना ममता क्षमा और न्याय का भाव भी लिए हैं। नवरात्रि नवचेतना और नवजागरण का पर्व है। अपनी समस्त ऊर्जा का समर्पण कर, मां से यह आह्वान करने का कि वो नई शक्ति और सोच का संचार करें। यह एक ऐसा महापर्व है, जो आस्था और विश्वास के जरिए अपनी ही असीम शक्तियों से परिचय करवाने का माध्यम भी बन सकता है। यूं तो नारी की प्रखरता और शक्ति सामर्थ्य का नाम ही दुर्गा है, पर जिम्मेदारी और सामाजिक बंधुओं में जकड़ी मातृशक्ति अपने हिसाब से अपरिचित रहती है। ऐसे में महिलाएं मां का आह्वान कर आज के दौर में परिस्थितियों से जूझने का साहस और संबल जुटाए, ना केवल मां की साधना करें। बल्कि उनके शक्तिस्वरूपा और जगत रूप को अपने भीतर स्थान दे। मन की शक्ति के उपार्जन का यह पर्व है। मातृ शक्ति की उपासना को सर्वोच्च दर्जा देता है। यूं भी भारतीय संस्कृति में मातृशक्ति को प्राणशक्ति माना गया है, और उसका स्थान सबसे ऊपर है। मनुष्य को पशुत्व से मनुष्यत्व की ओर तथा मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाने वाले इस मार्ग पर चलने के लिए क्षणिक सुख को जीवन से दूर रखना होगा। इस कार्य का उत्तरदायित्व पुरुषों के समान मातृशक्ति पर भी है। दुर्गा का अवतार लेकर स्त्रियों ने समाज की सभी संकटों से रक्षा की है और जहां ऐसी मातृशक्ति है। जिनके सामने आदर के साथ समाज नतमस्तक होता है। वह समाज समृद्धशाली बनेगा ही, जहां पर माता का अपमान होता है। वहां भगवान भी सुप्त हो जाते हैं और उन्हें अवतार कार्य की प्रेरणा मिलती है। यह भूमि हमारी शाश्वत माता है। माता और मातृभूमि के अपमान का बोध होने पर कार्य के लिए चालना मिलती है।

जब मनुष्य पशु बनकर समाज पर आघात करने लगा जब तक पुरुषों पर अत्याचार होते थे। तब तक मन में शोभ निर्माण नहीं हुआ। मातृत्व पर भी जब आघात होने लगे उन्हें पवित्रता की रक्षा के लिए चित्तौड़ जैसा भीषण जौहर करना पड़ा। माता के आशीर्वाद से ही बालक का शरीर वज्र जैसा बनता है। राष्ट्र की जीवनधारा को अक्षुण्ण रखने का उत्तरदायित्व मातृशक्ति ने भी संभाला है। आगे भी उन्हें निभाना है। आज सर्वत्र स द्भावना और शुद्धता का अभाव एवं स्वार्थ दिखाई देता है। इस वातावरण में अपने अतीव पवित्रता से प्रभावित करने का सामर्थ्य मातृशक्ति में ही हैं। ऐसे में शक्ति उपासना से ही राष्ट्र समृद्ध और सशक्त हो सकेगा।

(चिंतन-मनन)

क्षमा भाव आत्मसात करें

बुद्धि का अर्थ है नीर-क्षीर विवेक करने वाली शक्ति और ज्ञान का अर्थ है आत्मा तथा पदार्थ को जान लेना। ज्ञान का अर्थ है आत्मा तथा भौतिक पदार्थ के अन्तर को जानना। आधुनिक शिक्षा में आत्मा के विषय में कोई ज्ञान नहीं दिया जाता, केवल भौतिक तत्वों तथा शारीरिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है। फलस्वरूप शैक्षिक ज्ञान पूर्ण नहीं हैं। असम्मोह अर्थात संशय तथा मोह से मुक्ति तभी प्राप्त हो सकती है, जब मनुष्य झिझकता नहीं और दिव्य दर्शन को समझता है। वह धीरे-धीरे निश्चित रूप से मोह से मुक्त हो जाता है। क्षमा का अभ्यास करना चाहिए। मनुष्य को सहिष्णु होना चाहिए और दूसरों के छोटे अपराध क्षमा कर देना चाहिए।

सत्यम का अर्थ है तथ्यों को सही रूप में अन्यों के लाभ के लिए प्रस्तुत किया जाए। तथ्यों को तोड़ना-मरोड़ना नहीं चाहिए। सामाजिक प्रथा के अनुसार कहा जाता है कि वही सत्य बोलना चाहिए, जिससे दूसरे लोग समझ सके कि सच्चाई क्या है। कोई चोर है और यदि लोगों को सावधान कर दिया जाये कि अमुक व्यक्ति चोर है, तो यह सत्य है। यद्यपि सत्य कभी-कभी अप्रिय होता है, किन्तु कहने में संकोच नहीं करना चाहिए। सत्य की मांग है कि तथ्यों को यथारूप में लोकहित के लिए प्रस्तुत किया जाए। यही सत्य की परिभाषा है।

दम का अर्थ है इन्द्रियों को व्यर्थ विषयभोग में न लगाया जाए। अनावश्यक इन्द्रियभोग आध्यात्मिक उन्नति में बाधक है। मन पर भी अनावश्यक विचारों के विरुद्ध संयम रखना चाहिए। इसे शम कहते हैं। मनुष्य धन-अर्जन के चिन्तन में ही सारा समय न गवाए। यह चिन्तन शक्ति का दुरुपयोग है। मन का उपयोग मनुष्यों की मूल आवश्यकताओं को समझने के लिए किया जाना चाहिए। साधुपुरुषों, गुरुओं महान विचारको की संगति में रहकर विचार-शक्ति का विकास करना चाहिए। जो कुछ कृष्णभावनामृत के विकास के अनुकूल हो, उसे स्वीकार करे और जो प्रतिकूल हो, उसका परित्याग करे।

विचार मंथन

आर्थिक विकास और बढ़ता कर्ज: भारत की अर्थव्यवस्था का संकट ?

(लेखक-सनत कुमार जैन)

हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत की जीडीपी 3.4 ट्रिलियन डॉलर पर पहुंच गई है, देश पर कर्ज 3.3 ट्रिलियन डॉलर पर पहुंच गई है। हमारी अर्थव्यवस्था और कर्ज बराबर पर आ गए हैं। ऐसे में सवाल है, क्या भारत की अर्थव्यवस्था दिवालियापन की ओर बढ़ रही है। 2004 में अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल के अंत में भारत की अर्थव्यवस्था 700 बिलियन डॉलर थी। 10 वर्षों के मनमोहन शासनकाल में यह आंकड़ा बढ़कर 2014 में 2.25 ट्रिलियन डॉलर हो गया था। नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद 10 साल के शासन काल में जीडीपी 2024 में लगभग 3.4 ट्रिलियन डॉलर हो गई है। मोदी के पिछले एक दशक के कार्यकाल में औद्योगिक उत्पादन और विनिर्माण के क्षेत्र में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई,जिससे बेरोजगारी पिछले 10 वर्षों में तेजी के साथ बढ़ी है। आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार, मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं का अपेक्षित लाभ नहीं हुआ। मनमोहन सिंह के 10 साल के कार्यकाल में 1.55 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बढ़ी थी। 2008 में अमेरिकी आर्थिक मंदी का असर भी भारतीय अर्थ व्यवस्था में पड़ा था। मोदी के 10 साल के कार्यकाल में 1.15 ट्रिलियन डालर की अर्थ-व्यवस्था बढ़ी। 2014 में कर्ज 56 लाख करोड़ का भारत पर था। जो अब बढ़कर 1.65 करोड़ से ज्यादा हो चुका है। विनिर्माण क्षेत्र की विकास दर घटकर 5.5 फीसदी पर आ गई है। इस क्षेत्र में भी रोजगार में कमी आई है। भारत के कपड़ा रेडीमेड और हस्तकला उद्योग में चीन का कब्जा 80त्न तक हो गया है। जिससे भारतीय बाजार और उद्योग प्रभावित हुए हैं। पिछले एक दशक में प्रत्येक क्षेत्र में 100 फ़ीसदी विदेशी निवेश की छूट दिए जाने के बाद से भारत का लघु एवं मध्यम क्षेत्र का रोजगार और उद्योग धंधे बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। जिसके कारण देश में बड़ी तेजी के साथ बेरोजगारी बढी है।2014 में मोदी सरकार ने आते ही सभी सेक्टर में 100 फ़ीसदी विदेशी निवेश को जो छूट दी। उसके बाद से देश का आर्थिक ढांचा बुरी तरह गड़बड़ा गया है। भारत की अर्थव्यवस्था विदेशी निवेश और कर्ज पर आधारित हो गई है। अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति मे भारी कर्ज का बोझ कोढ में खाज की तरह हो गया है। पिछले 10 वर्षों में जनता के ऊपर टैक्स और शुल्क बेतहाशा बढ़ाए गए हैं। जिसके कारण महंगाई बड़ी तेजी के साथ बढ़ी, लोगों की आय कम हुई। स्थानीय रोजगार खत्म होने के कारण बेरोजगारी बढ़ी। सरकार ने इस दिशा में कोई ठोस ध्यान नहीं दिया। केंद्र सरकार राज्य सरकारों और स्थानीय संस्थाओं ने इन 10 वर्षों में विकास कार्यों और लोक लोभावन योजनाओं के लिए कर्ज लेकर सरकारी खर्चों को बढ़ा लिया। पिछले 10 सालों में लगातार टैक्स और शुल्क के रूप में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों को 2014 की तुलना में 10 गुना ज्यादा कमाई की है। केंद्र और राज्य सरकारों ने भारी कर्ज लिया। कर्ज लेने के लिए बजट का आकार बढ़ाया। जिससे ज्यादा से ज्यादा कर्ज मिल सके। 2014 से लेकर 2024 के बीच में सरकार ने कर्ज और विदेशी निवेश को ही प्राथमिकता दी है। सरकार का ध्यान कभी भी महंगाई, बेरोजगारी, नागरिकों के ऊपर बढ़ते कर्ज, स्थानीय स्तर पर बेरोजगारी जैसे विषयों पर नहीं रहा। 1970 से लेकर 2000 के 30 वर्षों में भारत में सभी क्षेत्रों में स्थानीय रोजगार लघु उद्योग के रूप में विकसित हुए थे। जिसके कारण भारत की अर्थव्यवस्था एक नए स्वरूप में पहुंच गई थी। 2008 की अमेरिकी मंदी का कोई प्रभाव भारत में इसलिए नहीं पड़ा।

हमारी अर्थव्यवस्था लघु एवं मध्यम उद्योगों के हाथ में थी। कृषि की अर्थव्यवस्था मजबूत थी। 2014 के बाद से हम विदेशी निवेश पर आश्रित होते चले गए। हमारा आयत कई गुना बढ़ गया। उसकी तुलना में हम अपना निर्यात नहीं बढ़ा पाए। कर्ज लेकर खर्च की पूर्ति करते रहे। जिसके कारण भारतीय अर्थव्यवस्था दिवालियापन की ओर बढ़ चली है। केंद्र एवं राज्य सरकारों के पास खर्च करने के लिए पैसे नहीं है। वह लगातार कर्ज उठा रहे हैं। बजट का 25 से लेकर 40 फ़ीसदी तक ब्याज और किस्त के रूप में राज्य सरकारों और केंद्र सरकार को सरकारी खजाने से चुकाना पड़ रहा है। भारत में आम जनता से दुनिया भर में सबसे ज्यादा टैक्स वसूल किया जा रहा है। अब इस टैक्स को बढ़ाया भी नहीं जा सकता है। लोगों की बचत खत्म हो गई है! पिछले कई वर्षों से बचत से खर्च मध्यम एवं निम्न वर्ग चला रहे हैं।

रॉयल एनफील्ड ने सितंबर में की बंपर ब्रिकी.....सालाना आधार पर 11 प्रतिशत वृद्धि

मुंबई । बाइक बनाने वाली कंपनी रॉयल एनफील्ड ने सितंबर में 86,978 गाड़ियां बेचीं, जो सालाना आधार पर 11 प्रतिशत वृद्धि है। पिछले साल सितंबर में कंपनी ने 78,580 गाड़ियां बेची थीं। रॉयल एनफील्ड ने कहा कि समीक्षाधीन अवधि में घरेलू बाजार में वाहन बिक्री सात प्रतिशत बढ़कर 79,326 इकाई रही, जो बीते साल समान माह में 74,261 इकाई थी। कंपनी ने बताया कि निर्यात सितंबर, 2024 में बढ़कर 7,652 इकाई रहा, जो बीते साल समान माह में 4,319 इकाई था। रॉयल एनफील्ड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) बी गोविंदराजन ने कहा,हमने अपने हालिया पेशकश के कारण सितंबर के महीने में लगातार वृद्धि दर्ज की है। इस साल क्लासिक 350 ने चालकों के बीच अपनी प्रतिष्ठित स्थिति और लोकप्रियता को मजबूत करना जारी रखा है और अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

वित्त वर्ष 2025 की पहली छःमाही में इलेक्ट्रिक वाहनों में 19 फीसदी की बढ़ोतरी

नई दिल्ली। वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही में इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री में 19 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। अप्रैल से सितंबर तक कुल 8,36,621 इलेक्ट्रिक वाहन बिके, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 7,02,013 वाहनों की तुलना में ज्यादा है। हालांकि मासिक आधार पर वृद्धि मामूली रही, जहां सितंबर में 1.22 फीसदी वृद्धि हुई, जो अगस्त 2024 में बेचे गए 1,46,745 वाहनों से ज्यादा है। सितंबर 2024 में वार्षिक आधार पर ईवी की बिक्री में 24.65 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है जिसमें 1,48,539 वाहन बिके, जबकि पिछले साल सितंबर में यह संख्या 1,19,163 थी। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के वाहन डेटा के मुताबिक इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में बढ़ोतरी का यह रुझान बना हुआ है। सितंबर में बिक्री इस कैलेंडर वर्ष में तीसरी सबसे ज्यादा रही, जबकि मार्च 2024 में 2,03,506 और जुलाई 2024 में 1,69,746 वाहन बिके थे। विश्लेषकों का मानना है कि श्राद्ध व पितृ पक्ष के चलते उपभोक्ताओं ने महंगी खरीदारी से परहेज किया इसके बावजूद यह आंकड़ा सकारात्मक रहा। इस दौरान वाहन निर्माताओं द्वारा दिए गए ऊंचे डिस्काउंट और अन्य ऑफर्स ने बिक्री में मामूली बढ़ोतरी का समर्थन किया है। उद्योग विशेषज्ञों को अक्टूबर 2024 में बिक्री और ज्यादा बढ़ोतरी की उम्मीद है, क्योंकि तीन अक्टूबर से त्योहारी सीजन शुरू हो रहा है। इस दौरान 10 से 15 फीसदी की बढ़ोतरी की संभावना जताई जा रही है, जिससे उद्योग को और ज्यादा बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

सितंबर में जीएसटी से केंद्र सरकार ने की रिकॉर्ड वसूली

खजाने में आए 1.73 लाख करोड़, पिछले साल की तुलना में 6.5फीसदी ज्यादा

नई दिल्ली। जीएसटी ने सितंबर 2024 में सरकार के खजाने में 1.73 लाख करोड़ रुपए की रिकॉर्ड वसूली की है। यह पिछले साल के मुकाबले 6.5फीसदी ज्यादा है, जब सितंबर 2023 में यह राशि 1.63 लाख करोड़ थी। हालांकि मासिक आधार पर यह संग्रह थोड़ा कम है, क्योंकि अगस्त 2024 में जीएसटी संग्रह 1.75 लाख करोड़ रुपए रहा था। सितंबर में घरेलू लेनदेन से सकल जीएसटी 5.9 फीसदी बढ़कर करीब 1.27 लाख करोड़ रुपए हो गया, जबकि वस्तुओं के आयात से राजस्व में 8फीसदी की बढ़ोरती हुई, जिससे कुल आय 45,390 करोड़ रुपए पर पहुंच गई। साथ ही जीएसटी विभाग ने इस महीने 20,458 करोड़ रुपए के रिफंड जारी किए है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 31 फीसदी ज्यादा हैं। शुद्ध जीएसटी राजस्व, रिफंड की राशि को समायोजित करने के बाद, 1.53 लाख करोड़ रुपए रहा, जो एक साल पहले की तुलना में 3.9 फीसदी ज्यादा है। चालू वित्तीय वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में कुल जीएसटी संग्रह 9.5 फीसदी बढ़कर 10.87 लाख करोड़ से ज्यादा हो गया है। जीएसटी संग्रह में यह बढ़ोतरी आर्थिक सुधार और व्यापार गतिविधियों में सुधार का संकेत है। विशेषज्ञों का मानना है कि त्योहारी सीजन के दौरान कर संग्रह में और वृद्धि की संभावना है। पीडब्ल्यूसी इंडिया ने कहा कि दरों को युक्तिसंगत बनाने की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए जीएसटी परिषद को इस पर ध्यान देना जरुरी है।

2000 रुपए के 98 फीसदी नोट वापस आए, चलन से पूरी तरह बाहर

आरबीआई के इस कदम का उद्देश्य डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना

मुंबई।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने दो हजार रुपए के नोटों पर बड़ा अपडेट देते हुए कहा कि चलन से बाहर हुए इन नोटों का 98 फीसदी हिस्सा अब तक वापस आया है। 19 मई 2023 को 2000 रुपए के नोटों को बंद करने घोषणा की गई थी। उस समय बाजार में इन नोटों का कुल मूल्य करीब 3.6 लाख करोड़ रुपए था। अब यह आंकड़ा घटकर सिर्फ 7,117 करोड़ रह गया है, जो यह बताता है कि ज्यादातर 2000 हजार के नोट जमा हो गए या एक्सचेंज करा लिए गए हैं।

आरबीआई के आंकड़ों के बाद स्पष्ट हो गया है कि 2000 रुपए के नोट अब करीब पूरी तरह से चलन से बाहर हो चुके हैं। 8 नवंबर 2016 को जब भारत में नोटबंदी लागू की गई थी, उस समय 500 और 1000 रुपए के पुराने नोटों को बंद कर दिया गया था और 2000 रुपए के नोटों को चलन में लाया गया था ताकि नकदी संकट से निपटा जा सके लेकिन 2023 में आरबीआई ने इन्हें धीरे-धीरे वापस लेने का फैसला लिया। लोगों को 7 अक्टूबर 2023 तक अपने 2000 रुपए के नोट जमा करने या बदलवाने की सुविधा दी गई थी। इसके बाद भी, जो लोग समय सीमा में अपने नोट जमा नहीं कर पाए थे, उन्हें आरबीआई के 19 रीजनल ऑफिस और डाकघरों के जरिए से यह सुविधा दी गई। आरबीआई ने पहले एक सितंबर 2024 को भी एक अपडेट जारी किया था, जिसमें यह बताया गया था कि 30 अगस्त 2024 तक 2000 रुपए के कुल 3.56 लाख करोड़ रुपए के नोट वापस आ चुके हैं। तब बैंकिंग प्रणाली में 7,261 करोड़ रुपए के नोट चलन में थे, जो अब घटकर 7,117 करोड़ रुपए रह गए हैं। आरबीआई ने कहा है कि 2000 रुपए के नोटों की वैधता अब भी बरकरार है, यानी यह नोट अब भी लीगल टेंडर हैं और अवैध घोषित नहीं किए गए हैं लेकिन आरबीआई समय-समय पर बुलेटिन जारी करके नोटों की स्थिति और उनके आंकड़े प्रस्तुत कर रहा है।

आरबीआई के इस कदम का उद्देश्य बाजार में नकदी प्रवाह को नियंत्रित करना और डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना है। 2000 रुपए के नोट की जगह अब छोटे मूल्यवर्ग के नोटों और डिजिटल भुगतान प्रणाली पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है।

पंजाब की मान सरकार ने बढ़ाया मजदूरी शुल्क, सरकार पर पड़ेगा अतिरिक्त बोझ

चंडीगढ़ ।

पंजाब की अनाज मंडियों में काम करने वाले मजदूरों को मान सरकार ने राहत दी है। पंजाब के सीएम भगवंत मान ने अनाज की लोडिंग और अनलोडिंग के लिए मजदूरी शुल्क बढ़ाने का ऐलान किया है। मजदूरी शुल्क में एक रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की गई है। यह कदम मंडियों में काम करने वाले मजदूरों के लिए राहत देने वाला बताया जा रहा है। इस वृद्धि से राज्य के खजाने पर करीब 18 करोड़ रुपए का अतिरिक्त भार आएगा। सीएम की इस घोषणा के साथ ही खरीफ विपणन सत्र 2024-25 के लिए धान की खरीद भी शुरू हो गई है। सीएम मान ने अपने मंत्रियों और विधायकों को निर्देश दिया है कि वे राज्य की मंडियों का दौरा करें और धान की खरीद प्रक्रिया को तेज करवाएं। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस प्रक्रिया को सुचारू और परेशानी मुक्त किया जाए ताकि किसानों को किसी भी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े। मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में धान की खरीद प्रक्रिया में तेजी आने की उम्मीद है। मान सरकार को इस खरीद सत्र के दौरान करीब 185 लाख टन धान की खरीद की उम्मीद है। सीएम मान ने यह भी तय किया कि किसानों की उपज को जल्द से जल्द खरीदा जाए और मंडियों में किसी भी प्रकार की देरी न हो। धान खरीद सत्र की इस शुरुआत से किसानों को भी राहत मिलेगी, क्योंकि वे अपनी उपज को जल्द और सुचारू रूप से बेच सकेंगे। इसके साथ ही, मंडी मजदूरों के लिए बढ़ा हुआ मजदूरी शुल्क उन्हें आर्थिक रूप से मदद देगा, जिससे उनकी आमदनी में सुधार होगा।

भारत के बाइक्स बाजार में होंडा यूनिकॉर्न का दबदबा

-हर महीने बिकती हैं लाखों यूनिट्स

नई दिल्ली ।

देश के मोटरसाइकिल बाजार में 150 सीसी से 200 सीसी इंजन सेगमेंट में होंडा यूनिकॉर्न का दबदबा साफ नजर आता है। इस श्रेणी में टीवीएस, बजाज, यामाहा, होंडा और हीरो के कई मॉडल शामिल हैं। हम यहां इस सेगमेंट के शीर्ष 10 सबसे अधिक बिकने वाले मॉडल की जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

अगस्त 2024 में होंडा यूनिकॉर्न की 31,351 यूनिट बिकीं, जबकि अगस्त 2023 में इसकी बिक्री 31,473 यूनिट थी। इस प्रकार, इसकी बिक्री में 122 यूनिट की कमी आई और 0.39प्रतिशत की सालाना गिरावट दर्ज की गई। टीवीएस अपाचे की बिक्री अगस्त 2024 में 30,038 यूनिट रही, जो कि अगस्त 2023 में 18,863 यूनिट थी। इसने 11,175 यूनिट की बढ़त हासिल की, जिससे 59.24प्रतिशत की सालाना वृद्धि हुई। बजाज पल्सर की अगस्त 2024 में 25,137 यूनिट बिकी, जबकि अगस्त 2023 में इसकी बिक्री 17,111 यूनिट थी। इसने 8,026 यूनिट अधिक बेचीं और 46.91प्रतिशत की सालाना वृद्धि दिखाई। यामाहा स्ïं की बिक्री अगस्त 2024 में 12,253 यूनिट रही, जबकि अगस्त 2023 में यह 13,241 यूनिट थी। इसमें 988 यूनिट की गिरावट आई और 7.46प्रतिशत की सालाना कमी दर्ज की गई। यामाहा एमटी 15 ने अगस्त 2024 में 9,929 यूनिट बेचीं, जबकि पिछले वर्ष इसी महीने में इसकी बिक्री 7,296 यूनिट थी। यह 2,633 यूनिट की वृद्धि के साथ 36.09प्रतिशत की सालाना वृद्धि दर्शाती है। यामाहा आर 15 की अगस्त 2024 में बिक्री 8,583 यूनिट रही, जबकि अगस्त 2023 में यह 10,483 यूनिट थी, जो कि 1,900 यूनिट की कमी और 18.12 प्रतिशत की सालाना गिरावट दर्शाती है। होंडा स्क्र160 की बिक्री अगस्त 2024 में 4,858 यूनिट रही, जो अगस्त 2023 में 2,278 यूनिट थी। इससे 2,580 यूनिट की वृद्धि और 113.26प्रतिशत की सालाना वृद्धि मिली। हीरो एक्सपल्स 200 की अगस्त 2024 में बिक्री 2,930 यूनिट रही, जबकि पिछले वर्ष यह 3,914 यूनिट थी, जिससे 984 यूनिट की कमी और 25.14प्रतिशत की सालाना गिरावट आई।

केटीएम 200 की अगस्त 2024 में 2,332 यूनिट बिकीं, जो कि अगस्त 2023 में 3,403 यूनिट थीं। यहां 1,071 यूनिट की कमी आई और 31.47 प्रतिशत की सालाना गिरावट दर्ज की गई। हीरो एक्सट्रीम 160क्र200 की अगस्त 2024 में बिक्री 2,272 यूनिट रही, जबकि अगस्त 2023 में इसकी बिक्री 3,869 यूनिट थी, जिससे 1,597 यूनिट की कमी और 41.28प्रतिशत की सालाना वृद्धि दर्ज की गई। बता दें कि देश के मोटरसाइकिल बाजार में हीरो स्प्लेंडर का एक मजबूत वर्चस्व है, जिसकी हर महीने लाखों यूनिट्स बिकती हैं।

अडानी समूह की दो कंपनियों में विलय...अदाणी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड नई कंपनी

नई दिल्ली ।

भारत के सबसे अमीर उद्योगपति गौतम अदाणी की दो कंपनियों का 2 अक्टूबर को विलय हो गया है। शेयर बाजार को दी जानकारी में कंपनी ने बताया कि अदाणी ग्रुप के पूर्ण स्वामित्व वाली दो कंपनियों का विलय पूरा हो गया है। अदाणी ग्रुप की विलय होने वाली दो कंपनियां, अदाणी इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड और मुंद्रा सोलर टेक्नोलॉजी लिमिटेड है। इन दोनों कंपनियों का विलय अदाणी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड में होगा। अदाणी एंटरप्राइजेज ने कहा, 'हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि कंपनी की दो पूर्ण स्वामित्व वाली स्टेप-डाउन सब्सिडियरी कंपनियां अदाणी इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड और मुंद्रा सोलर टेक्नोलॉजी लिमिटेड का अदाणी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड के साथ विलय हो गया है। अदानी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड अदाणी एंटरप्राइजेज की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। अदाणी एंटरप्राइजेज ने बताया कि विलय 1 अक्टूबर, 2024 से प्रभावी हो गया है। अधिकारियों के साथ वैधानिक फाइलिंग सहित सभी प्रक्रियात्मक औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं। अदाणी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड (एएनआईएल), अदाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड (एईएल) की ग्रीन एनर्जी प्रोडक्ट्स जैसे-

सोलर ग्लास, एल्यूमीनियम फ्रेम और बैक शीट का मैन्युफैक्चरिंग प्लांट स्थापित कर रही है। ये कंपनी के मौजूदा सोलर सेल और मॉड्यूल मैन्युफैक्चरिंग के लिए प्रमुख घटक हैं। कंपनी कम कार्बन वाली परियोजनाएं चलाती है। यह ग्रीन हाइड्रोजन प्रोजेक्ट्स, पवन टरबाइन, और सोलर मॉड्यूल बैटरी की मैन्युफैक्चरिंग करती है। फ्रांस की एनर्जी सेक्टर की दिग्गज कंपनी टोटल एनर्जीज की अदाणी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड में 25 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी है। बाकी शेयरों में से अधिकांश का स्वामित्व एईएल के पास ही है।

सितंबर में कोयला उत्पादन 6.89 करोड़ टन पहुंचा

नई दिल्ली।

देश का कोयला उत्पादन सितंबर में 2.49 फीसदी बढ़कर 6.89 करोड़ टन हो गया। इसकी जानकारी एक आधिकारिक बयान में दी गई। पिछले वित्त वर्ष में इसी महीने में कोयला उत्पादन 6.72 करोड़ टन था। अप्रैल से सितंबर के दौरान कोयला उत्पादन 5.85 फीसदी से बढ़कर 45.30 करोड़ टन हो गया, जो 2023-24 में इसी अवधि में 42.79 करोड़ टन था। बयान में कहा गया कि ये आंकड़े अनंतिम हैं।

निवेशकों को हो रहे नुकसान को रोकने सेबी ने किए छह सुधारात्मक उपाय

-अनुबंधों का आकार 5 लाख से बढ़ाकर 15 लाख रुपए किया

नई दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने डेरिवेटिव ट्रेडिंग में अटकलबाजी और खुदरा निवेशकों को हो रहे भारी नुकसान पर रोक लगाने के लिए छह सुधारात्मक उपायों का ऐलान किया है। सेबी के मुताबिक इन उपायों का उद्देश्य डेरिवेटिव बाजार में स्थिरता लाना और निवेशकों के हितों की सुरक्षा तय करना है।

सेबी के मुताबिक पिछले तीन वित्त वर्षों में 93 फीसदी से ज्यादा खुदरा निवेशकों को वायदा एवं विकल्प (एफऐंडओ) सेगमेंट में कुल 1.8 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। इतनी बड़ी मात्रा में घाटा होने से आरबीआई और मुख्य आर्थिक सलाहकार सहित अन्य वित्तीय नियामकों ने भी चिंता जताई थी। इसको ध्यान में रखते हुए सेबी ने डेरिवेटिव ट्रेडिंग ढांचे में अहम बदलाव किए हैं।

पहले डेरिवेटिव अनुबंधों का आकार 5 लाख था, जिसे बढ़ाकर 15 लाख रुपए कर दिया गया है। यह पहली बार है जब पिछले 9 साल में अनुबंध के आकार में कोई बदलाव किया गया है। वही शॉर्ट पोजीशन अनुबंधों पर अतिरिक्त 2 फीसदी का अत्यधिक नुकसान मार्जिन लागू किया जाएगा, जो 20 नवंबर 2024 से लागू होगा। ब्रोकरों को अब ऑप्शन खरीदारों से प्रीमियम अग्रिम में लेना अनिवार्य होगा, जिससे इंट्राडे ट्रेडिंग में अत्यधिक लाभ उठाने से रोका जा सके।

साप्ताहिक निपटान को प्रति एक्सचेंज एक बेंचमार्क तक सीमित किया गया है। इससे अत्यधिक अटकलबाजी और बाजार में अस्थिरता कम होगी। स्टॉक एक्सचेंजों को निर्देश दिया गया है कि वह पोजीशन लिमिट पर इंट्राडे के आधार पर नजर रखें। यह नियम अप्रैल 2025 से लागू होगा। निपटान के दिन अलग कैलेंडर की व्यवस्था को खत्म कर दिया गया है, ताकि बाजार में समानता और पारदर्शिता आए।

सेबी के इन बदलावों का उद्देश्य खुदरा निवेशकों को हो रहे भारी नुकसान को कम करना और डेरिवेटिव बाजार में स्थिरता लाना है।

अब मध्य प्रदेश में कमर्शियल क्षेत्र के फ्लोर एरिया को किया जाएगा दोगुना

राज्य सरकार ने लिया फैसला, शहरी विकास को मिलेगी नई दिशा

भोपाल। मध्य प्रदेश के कमर्शियल क्षेत्रों में भवन निर्माण को लेकर बदलाव होने वाले हैं। राज्य सरकार ने फैसला लिया है कि प्रदेशभर में कमर्शियल क्षेत्र के फ्लोर एरिया रेशियो (एफएआर) को दोगुना कर 5 से 7 तक किया जाएगा। वर्तमान में भोपाल में एफएआर 2.5 है, जो नए नियम के लागू होने के बाद व्यापारिक भवनों के लिए ज्यादा मंजिलें बनाने की अनुमति देगा। इस कदम से न केवल व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि शहरी विकास को भी नई दिशा मिलेगी।

इसके अलावा, बिल्डिंग में नेशनल बिल्डिंग कोड का पालन अनिवार्य होगा। इस बदलाव का उद्देश्य भवनों की संरचना को और ज्यादा मजबूत और सुरक्षित बनाना है। टाउन एंड कंट्री प्लानिंग ने भूमि विकास नियम-2012 में संशोधन के लिए प्रस्ताव तैयार किया है और जल्द ही इसका नोटिफिकेशन जारी किया जाएगा। यह बदलाव राजधानी भोपाल और पूरे प्रदेश के शहरी क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

नए नियमों की विशेषताओं में सभी दुकानों और आवासों में आग से सुरक्षा के इंतजाम किए जाएंगे। इससे आगजनी की घटनाओं में कमी आएगी। हर कॉलोनी में इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) चार्जिंग स्टेशन बनाना अनिवार्य होगा। यह कदम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक पहल है। वर्तमान में रेसीडेंशियल में 30फीसदी कमर्शियल में 40 फीसदी और हाईराइज में 50 फीसदी ग्राउंड कवरेज की अनुमति है। नए नियमों के तहत ग्राउंड कवरेज लिमिट को खत्म कर केवल न्यूनतम खुला क्षेत्र निर्धारित किया जाएगा।

केंद्र सरकार ने राज्यों से शहरी क्षेत्रों में सुधार करने को कहा है ताकि अमृत योजना और अन्य शहरी विकास योजनाओं के लिए अनुदान प्राप्त किया जा सके। ये सभी बदलाव केंद्र द्वारा निर्धारित सुधारों का हिस्सा है, जिनके आधार पर अनुदान राशि तय की जाएगी। टी एंड सीपी ने भूमि विकास नियमों में संशोधन के लिए अलग-अलग प्रस्ताव दिए हैं। इन प्रस्तावों पर केंद्र सरकार की मंशा के मुताबिक विचार किया जाएगा। इस प्रकार, भोपाल में आने वाले समय में कमर्शियल भवन निर्माण में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा, जो निवेश और विकास के नए अवसर पैदा करेगा।

ओला इलेक्ट्रिक की बिक्री हुई कम, प्रतिस्पर्धी कंपनियों से मिल रही चुनौती

नई दिल्ली।

भारत की टॉप इलेक्ट्रिक स्कूटर बनाने वाली कंपनी ओला इलेक्ट्रिक ने इस साल सितंबर में सबसे कम बिक्री की है जिससे बाजार में इसका दबदबा कमजोर पड़ गया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक साफ्टबैंक समर्थित कंपनी ओला इलेक्ट्रिक को छोटी प्रतिस्पर्धी कंपनियों और सर्विस नेटवर्क की चुनौतियों के कारण गिरावट का सामना करना पड़ रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक ओला इलेक्ट्रिक ने करीब दो महीने पहले शेयर बाजार में कदम रखा था। कंपनी ने सितंबर 2024 में 23,965 वाहन बेचे। यह लगातार दूसरे महीने गिरावट का संकेत देती है। इस दौरान ओला की निकटतम प्रतिस्पर्धी कंपनी टीवीएस मोटर की लगातार पांच महीने से और बजाज ऑटो की लगातार तीन महीने से बाजार की हिस्सेदारी में इजाफा हुआ है।

ओला कंपनी ने अक्सर बाजार की तुलना में कम कीमतों पर अपने ई-स्कूटर बेचे हैं। अब इसके स्कूटर्स की बिक्री में गिरावट कंपनी के वित्तीय परिणामों के लिए एक चुनौती बन गई है। कंपनी अब तक मुनाफा नहीं कमा सकी है। विश्लेषकों का मानना है कि ओला की बढ़त को प्रतिस्पर्धियों की तरफ से नए मॉडल लॉन्च करने से नुकसान उठाना पड़ रहा है। साथ ही कंपनी के कमजोर सर्विस नेटवर्क की वजह से स्कूटर्स की मरम्मत पेंडिंग है और यह भी कंपनी की साख को नुकसान पहुंचा रही है।

बजाज और टीवीएस ने अपने डीलरशिप नेटवर्क के विस्तार से ओला को चुनौती दी है। एलारा कैपिटल के मुताबिक बजाज ने पिछले साल अपने चेतक ई-स्कूटर्स के लिए डीलरशिप की संख्या 100 से बढ़ाकर जून तक 500 कर दी थी, जबकि ओला की डीलरशिप संख्या 750 से केवल 800 तक बढ़ी है। पिछले महीने एक शख्स को हाल ही में खरीदे गए ई-स्कूटर की खराब सेवा से असंतुष्ट होकर कर्नाटक राज्य में एक ओला शोरूम में आग लगाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। विश्लेषकों ने पिछले महीने एक नोट में कहा था कि ओला की बाजार हिस्सेदारी को बनाए रखने में सर्विस कंपनी की बड़ा रोल होगा।

मुनाफावसूली से हल्दी की कीमतों में आई गिरावट, 5 फीसदी भाव नीचे आए

नई दिल्ली।

बीते कुछ दिनों से हल्दी की कीमतों में गिरावट नजर आ रही है। जानकारों के मुताबिक इसके दाम घटने की वजह मुनाफा वसूली है।

बारिश से नुकसान की खबर से हल्दी के दाम चढ़ गए थे। इसलिए ऊंचे भाव पर बाजार में मुनाफा वसूली चल रही है। छोटी अवधि में हल्दी के भाव और गिर सकते हैं लेकिन लंबी अवधि में भाव बढ़ने की संभावना है।

कमोडिटी एक्सचेंज नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज पर हल्दी का अक्टूबर अनुबंध सप्ताह भर पहले 14,530 रुपए पर बंद हुआ था, यह बुधवार को खबर लिखे जाने तक 13,830 रुपए के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस तरह सप्ताह भर में भाव में करीब पांच फीसदी की गिरावट आई है। आज भी इसके भाव में करीब 1.5 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। अगस्त महीने में इसके भाव गिरकर 13 हजार रुपए से नीचे चले गए लेकिन पिछले महीने बारिश से नुकसान की खबर ने भाव बढ़कर 15 हजार रुपए करीब पहुंचा दिए थे।

कमोडिटी विश्लेषक ने बताया कि बीते दिनों हल्दी के भाव चढ़ गए थे। अब इसमें मुनाफावसूली होने से दामों में गिरावट आई है। स्टॉकिस्ट माल निकाल रहे हैं। इस साल हल्दी का रकबा 20 फीसदी ज्यादा होने से उत्पादन बढ़ने की संभावना है।

ंग्लादेश से हल्दी की निर्यात मांग भी कमजोर हुई है। लिहाजा हल्दी के दाम में सुस्ती देखने को मिल रही है।

आईसीसी टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में फिर शीर्ष पर पहुंचे बुमराह

-यशस्वी बल्लेबाजी रैंकिंग में तीसरे स्थान जबकि विराट छठे स्थान पर पहुंचे

दुबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में एक बार फिर शीर्ष पर पहुंच गये हैं। बुमराह को बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज में बेहतर प्रदर्शन का लाभ मिला है। आईसीसी के अनुसार दूसरे टेस्ट में छह विकेट लेने के बाद बुमराह पहले नंबर पर चल रहे आर अश्विन से एक अंक आगे निकलकर नंबर एक स्थान पर पहुंच गये। वहीं इस सीरीज में अच्छी बल्लेबाजी करने वाले भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल दो स्थान के लाभ के साथ ही तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं।

अश्विन ने दूसरे टेस्ट में 5 विकेट लिए और वह बुमराह की 870 अंकों की रेटिंग से केवल एक अंक पीछे हैं जबकि बांग्लादेश को मेहदी हसन अपनी अच्छी गेंदबाजी से चार स्थान ऊपर आकर 18वें स्थान पर और अनुभवी स्पिनर शाकिब अल हसन पांच स्थान के लाभ के साथ ही 28वें स्थान पर पहुंच गये हैं। वहीं श्रीलंका के स्पिनर प्रभात जयसूर्या ने न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज में 18 विकेट लेकर एक पायदान ऊपर आकर सातवें स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं इंग्लैंड के जो रूट और न्यूजीलैंड के केन विलियमसन पहले और दूसरे नंबर पर हैं, वहीं भारत के ही विराट कोहली की भी शीर्ष दस में वापसी हुई है। विराट छह स्थान की छलांग लगाकर छठे स्थान पर पहुंच गये हैं।

बांग्लादेश पर जीत की बदौलत भारत विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की तालिका में शीर्ष पर और आगे बढ़ गया है और लगातार तीसरे फाइनल में जगह बनाने की स्थिति में है। सलामी बल्लेबाज जायसवाल को बांग्लादेश के खिलाफ बारिश से प्रभावित टेस्ट के दौरान प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया और बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने अपडेट की गई टेस्ट बल्लेबाज रैंकिंग में दो स्थान की छलांग लगाकर तीसरे स्थान पर पहुंचकर अपने करियर की नई सर्वोच्च रेटिंग हासिल की। ??उन्होंने इस मुकाबले में 72 और 51 रन बनाए। इसका मतलब यह है कि टेस्ट बल्लेबाजों की अपडेट की गई रैंकिंग में

श्रीलंका के दाएं हाथ के बल्लेबाज कामिंडू मेंडिस पांच स्थान के सुधार के साथ 11वें स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं श्रीलंका के ही दिनेश चांदीमल छह स्थान के लाभ के साथ 20वें स्थान पर और एंजेलो मैथ्यूज चार स्थान के सुधार के साथ 23वें स्थान पर हैं। वहीं सीमित ओवरों में

ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के बाद एक स्थान के फायदे से वनडे बल्लेबाजों की सूची में 20वें स्थान पर पहुंच गए हैं। इंग्लैंड के जोड़ीदार हैरी ब्रूक 73 स्थान ऊपर चढ़कर 50वें स्थान पर और बेन डकेट 30 स्थान ऊपर चढ़कर 54वें स्थान परपहुंच गए हैं।

भारत में पहली बार होगा खो-खो विश्व कप, 24 देश लेंगे हिस्सा

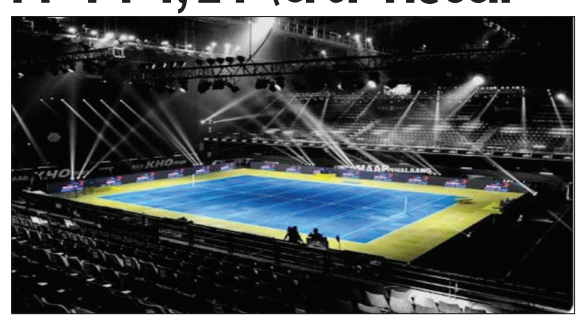

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में अगले साल खो-खो विश्व कप का आयोजन किया जायेगा जिसमें छह महाद्वीपों के 24 देश हिस्सा लेंगे। भारतीय खो-खो महासंघ ने अंतरराष्ट्रीय खो-खो फेडरेशन के सहयोग से 2025 में भारत में पहले खो खो विश्वकप के आयोजन का ऐलान किया है जिसमें छह महाद्वीपों के 24 देश भाग लेंगे। इसमें 16 पुरुष और 16 महिला टीमें भाग लेंगी। खो-खो की जड़ें भारत में हैं। आज, यह खेल जो मिट्टी से शुरू हुआ और मैट पर आ गया है और दुनिया भर में 54 देशों के साथ वैश्विक उपस्थिति बना चुका है।

विश्व कप से पहले खेल को बढ़ावा देने के लिए भारतीय खो-खो महासंघ 10 शहरों के 200 एलीट स्कूलों में खेल को ले जाने की योजना बना रहा है। महासंघ स्कूली छात्रों के लिए सदस्यता अभियान भी चलाएगा, जिसका उद्देश्य विश्व कप से पहले कम से कम 50 लाख खिलाड़ियों को पंजीकृत करना है। भारतीय खो-खो महासंघ के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल ने कहा, 'हम पहले खो-खो विश्व कप की मेजबानी करने के लिए बेहद उत्साहित हैं।

यह टूर्नामेंट सिर्फ प्रतिस्पर्धा की मिसाल नहीं बनेगा बल्कि यह देशों को एक साथ लाने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और दुनिया को खो-खो की सुंदरता और तीव्रता दिखाने का काम करेगा। हमारा अंतिम लक्ष्य 2032 तक खो-खो को ओलंपिक खेल के रूप में मान्यता दिलाना है और यह विश्व कप उस सपने की ओर पहला कदम है।' इस टूर्नामेंट में एक हफ्ते तक चलने वाले मैचों की श्रृंखला होगी, जिसमें दुनिया भर के शीर्ष-स्तरीय एथलीट अपने कौशल, चपलता और टीमवर्क का प्रदर्शन करेंगे।

इस बीच, खो-खो विश्व कप का उद्देश्य इस स्वदेशी भारतीय खेल को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहुंचाना है। इस ऐतिहासिक टूर्नामेंट की मेजबानी करके, केकेएफआई 2032 संस्करण तक ओलंपिक खेलों में खो-खो की जगह सुरक्षित करने की इच्छा रखता है, जो खेल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

टिम साउथी ने दिया इस्तीफा, भारत दौरे पर इसे मिली न्यूजीलैंड टेस्ट टीम की कप्तानी

वेलिंगटन (एजेंसी)। अनुभवी तेज गेंदबाज टिम साउथी ने न्यूजीलैंड के टेस्ट कप्तान के पद से इस्तीफा दे दिया है और विकेटकीपर-बल्लेबाज टॉम लाथम भारत के खिलाफ घरेलू मैदान पर होने वाली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के दौरान टीम की कमान संभालेंगे। यह फैसला गॉल में श्रीलंका के खिलाफ कीवी टीम की 2-0 की हार के बाद आया है जिसमें से एक मैच में पारी और 154 रनों के बड़े अंतर से हार भी मिली।

आईसीसी के अनुसार साउथी न्यूजीलैंड की टेस्ट टीम के प्रभारी हैं। जब से केन विलियमसन ने 2022 के अंत में पद छोड़ा है, उन्होंने 14 टेस्ट मैचों में से छह में जीत और दो ड्रॉ के साथ टीम की कप्तानी की है। 35 वर्षीय ने कहा कि पद छोड़ने का फैसला टीम के सर्वोत्तम हित में था और वह नए कप्तान के रूप में लाथम का समर्थन करेंगे।

आईसीसी के हवाले से साउथी ने कहा, 'मेरे लिए बहुत खास फॉर्मेट में ब्लैक कैप्स की कप्तानी करना मेरे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात है। मैंने अपने पूरे करियर में हमेशा टीम को प्राथमिकता देने की कोशिश की है और मेरा मानना है कि यह फैसला टीम के लिए सबसे अच्छा है। मेरा मानना है कि मैं टीम की बेहतर सेवा मैदान पर अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करके और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके, विकेट लेना जारी रखकर और न्यूजीलैंड को टेस्ट मैच जीतने में मदद करके कर सकता हूं।'

उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा की तरह अपने साथियों, खासकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह बनाने वाले रोमांचक युवा गेंदबाजों का समर्थन करना जारी रखूंगा। मैं टॉम को इस भूमिका के लिए शुभकामनाएं देता हूं और वह जानता है कि मैं उसकी यात्रा में उसका साथ देने के लिए हमेशा मौजूद रहूंगा, जैसा कि उसने पिछले कई सालों में मेरे लिए किया है।'

पीएम नरेंद्र मोदी से मिले दिग्गज बल्लेबाज क्रिस गेल

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के दिग्गज बल्लेबाज क्रिस गेल ने जमैका के प्रधानमंत्री एंड्रयू होलनेस की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। बुधवार को इंस्टाग्राम पर गेल ने होलनेस की यात्रा के दौरान पीएम मोदी और अन्य प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों से हाथ मिलाते और उनसे मुलाकात करते हुए वीडियो और तस्वीरें पोस्ट कीं।

गेल ने ट्वीट किया, 'भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। जमैका टू इंडिया वनलव।' जमैका के प्रधानमंत्री 30 सितंबर से 3 अक्टूबर तक भारत के आधिकारिक दौरे पर हैं। यह उनकी पहली भारत यात्रा है और जमैका के किसी प्रधानमंत्री की भारत की पहली द्विपक्षीय यात्रा भी है। जमैका के प्रधानमंत्री ने मंगलवार एक अक्टूबर को राष्ट्रीय राजधानी में हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की और द्विपक्षीय बैठक की। द्विपक्षीय बैठक के बाद दोनों नेताओं के बीच प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता हुई। भारत और जमैका के बीच मजबूत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं, जो उनके साझा औपनिवेशिक अतीत, लोकतंत्र और स्वतंत्रता के मूल्यों और क्रिकेट के प्रति जुनून में परिलक्षित होते हैं। गेल जमैका और पूरे कैरिबियन से भारत में खेल के सबसे बड़े एम्बेस्डरों में से एक हैं। 1999-2021 के बीच 42 शतक और 105 अर्द्धशतक के साथ खेल में निरंतरता और बदलते समय के साथ अनुकूलन करने की क्षमता ने गेल को लोकप्रिय बनाया। अपने करियर के दूसरे भाग में गेल मुख्य रूप से अपने टी20 कारनामों के लिए प्रसिद्ध हो गए जिसमें उन्होंने 463 मैचों में 36.22 की औसत से 14,562 रन के साथ प्रारूप के शीर्ष रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए, जिसमें 455 पारियों में 22 शतक और 88 अर्द्धशतक शामिल थे। उनके पास टी20 में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर 175* भी है।

महिला टी20 विश्व कप : भारत ने गेंदबाजी के दम पर जीता वार्म अप मैच, द. अफीका को हराया

खेल डैस्क । भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने टी20 क्रिकेट विश्व कप 2024 की राह में दक्षिण अफ्रीका को वार्मअप मैच में हरा दिया है। दुबई की आईसीसी अकादमी ग्राऊंड में खेले गए मुकाबले में भारतीय टीम ने खराब शुरूआत के बावजूद ऋचा घोष और दीप्ति शर्मा की उत्कृष्ट पारियों की बदौलत 7 विकेट खोकर 144 रन बनाए थे। जवाब में खेलने उतरी दक्षिण अफ्रीकी टीम ने जैसे ही ओपनर्स को गंवाया, टीम रन रेट का पीछे करने से पिछड़ गई। अंत में एनेरी डर्कसन 21 रन बनाकर नाबाद रही लेकिन तब तक ओवर पूरी हो चुके थे। इस तरह दक्षिण अफ्रीका को 28 रन से हार झेलनी पड़ी। भारतीय टीम की शुरूआत खराब रही। शैफाली वर्मा 0 पर ही आऊट हो गई। इसके बाद स्मृति मंधाना ने 22 गेंदों पर 21 तो कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 11 गेंदों पर 10 रन बनाए। मध्यक्रम में जेमिमा रोड्रिग्ज ने एक छोर संभाल लिया। उन्हें ऋचा घोष का बाखूबी साथ मिला। जेमिमा ने 26 गेंदों पर 3 चौकों की मदद से 30 रन बनाए। इसके बाद ऋचा का साथ दीप्ति शर्मा ने दिया। ऋचा जहां 25 गेंदों पर दो चौके और 2 छक्कों की मददसे 36 रन बनाए। इसके बाद दीप्ति ने 29 गेंदों पर 35 रन बनाकर स्कोर 144 तक पहुंचा दिया। साऊथ अफ्रीका की ओर से अयाबोंगा खाका ने 25 रन देकर 5 विकेट लीं। दक्षिण अफ्रीका ने 145 रन का लक्ष्य मिलते ही लॉरा और तजमीन ब्रिट्ज की बदौलत अच्छी शुरूआत की थी। कप्तान लॉरा ने 26 गेंदों पर 29 रन तो ब्रिट्ज ने 25 गेंदों पर 4 चौकों की मदद से 22 रन बनाए। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका ने अनीका 3 और सुन लुस 3 का जल्द विकेट गंवा दिया। मध्यक्रम में चोल ने एक छोर संभाला लेकिन उन्हें दूसरे छोर से खास सहारा नहीं मिला। वह 20 गेंदों पर 24 रन बनाकर आऊट हो गई। इसके बाद एनेरी डर्कसन ने 16 गेंदों पर 21 रन जरूर बनाए लेकिन तब तक देरी हो चुकी थी।

सुमित नागल शंघाई मास्टर्स के पहले दौर में बाहर

शंघाई। भारतीय टेनिस स्टार सुमित नागल का खराब प्रदर्शन शंघाई मास्टर्स टेनिस टूर्नामेंट में भी जारी रहा जहां उन्हें बुधवार को यहां पहले दौर में ही सीधे सेटों में हार का सामना करना पड़ा। यह 27 वर्षीय भारतीय खिलाड़ी चीन के वू यिबिंग के सामने खास चुनौती पेश नहीं कर पाया और 6-3, 6-3 से हारने के कारण उनका अभियान पहले दौर में ही समाप्त हो गया। नागल अगस्त में अमेरिकी ओपन के पुरुष एकल में पहले दौर में नीदरलैंड के टालोन ग्रिक्सपुर से हारकर बाहर हो गए थे। अमेरिकी ओपन के बाद वह पहली बार किसी टूर्नामेंट में भाग ले रहे थे। नागल हाल में स्वीडन के खिलाफ डेविस कप मुकाबले में नहीं खेले थे जिसके कारण अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) के साथ उनका विवाद हो गया था। नागल पिछले कुछ समय से पीठ की चोट से जूझ रहे हैं।

आईपीएल गवर्निंग काउंसिल के नये नियम से धोनी को होगा करोड़ों का नुकसान

मुम्बई । आईपीएल गवर्निंग काउंसिल के नीयमों में बदलाव से चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) टीम के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी को करोड़ों का नुकसान हो सकता है। अब आईपीएल की अगली नीलामी में उन खिलाड़ियों को अनकैप्ड की लिस्ट में रखा जाएगा जिन्होंने 5 साल पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था और जिनके पास बीसीसीआई अनुबंध नहीं है। धोनी ने साल 2020 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था और उनके पास बीसीसीआई का अनुबंध भी नहीं है हालांकि नियमों के अनुसार वह 2025 आईपीएल खेलने के पात्र हैं। धोनी ने अपना आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच 2019 में खेला था। धोनी ने आईपीएल 2024 सीजन की शुरुआत से पहले चेन्नई सुपरकिंग्स टीम की कप्तानी से इस्तीफा दे दिया था. उन्हें तब सीएसके ने 12 करोड़ में रिटेन किया था। वहीं अब अगर सीएसके धोनी को बतौर अनकैप्ड खिलाड़ी रिटेन करती है तब उनके वेतन में करोड़ों की कमी करनी पड़ेगी। नए नियम के तहत अनकैप्ड खिलाड़ियों को 4 करोड़ रुपए में रिटेन किया जाएगा। ऐसे में धोनी को करीब 66.67 प्रतिशत का घाटा होगा। आईपीएल में हमेशा से ऐसा रहा है कि मेगा नीलामी में हर बार विदेशी और भारतीय प्लेयर रिटेन करने की सीमा तय होती थी पर इस बार विदेशी और भारतीय खिलाड़ियों को रिटेन करने की कोई सीमा नहीं है। फ्रेंचाइजी चाहें तो पांचों भारतीय या पांचों विदेशी प्लेयर्स को भी रिटेन कर सकती हैं।

टी20 महिला विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के इरादे से उतरेगी भारतीय टीम : मंधाना

दुबई (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उप-कप्तान स्मृति मंधाना ने कहा कि उनकी टीम गुरुवार से शुरु हो रहे टी20 महिला विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के इरादे से उतरेगी। मंधाना ने माना कि यहां की तेज गरमी से खिलाड़ियों को परेशानी होगी पर कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने के दौरान इस प्रकार के बहाने नहीं बनाये जा सके। आपको हर प्रकार के हालातों में खेलने के लिए तैयार रहना होता है। भारतीय टीम अपना पहला मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 4 अक्टूबर को खेलेगी। इसके बाद, टीम 6 अक्टूबर को उसे पाकिस्तान से खेलना है।

स्मृति ने कहा, दोपहर का मैच गर्मी के कारण चुनौतीपूर्ण होने वाला है पर जब आप भारत के लिए खेलते हैं, तो कोई बहाना नहीं होता है। आपको अच्छी तरह से तैयारी करनी होती है, और मुझे लगता है कि हमारे पास हालातों के अनुकूल तैयारी करने के लिए थोड़ा समय है। मुझे भरोसा है कि जब तक हम पाक का मुकाबला करेंगे तब तक मानसिक रूप से तैयार हो जाएंगे। हमें मजबूत बने रहने की जरूरत है। हम अन्य टीमों की तुलना में कुछ हद तक गर्मी के आदी हैं पर अभ्यास के पहले कुछ दिन यहां काफी थकान भरे रहे। तैयारी हालांकि अच्छी रही है और यहां आने से पहले हमने बेंगलुरु में एक शानदार कैंप लगाया था, जहां हमने सभी बातों पर ध्यान दिया था।

महिला क्रिकेट में भारत-पाक प्रतिद्वंद्विता को लेकर कहा, मुझे लगता है कि भारत-पाकिस्तान मुकाबला किसी और चीज से ज्यादा प्रशंसकों की भावनाओं से जुड़ा है। ऐसा नहीं है कि खिलाड़ी एक-दूसरे से बात नहीं करते, यह दोनों देशों की भावनाएं हैं जो इसे इतना रोमांचक बनाती हैं। भारतीय टीम टूर्नामेंट के ग्रुप ए में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ है।

विश्व शतरंज रैंकिंग : अर्जुन , गुकेश और दिव्या नें बिखेरी चमक

नई दिल्ली । विश्व शतरंज संघ नें आज अक्टूबर महा की रेटिंग जारी कर दी है और 45वें शतरंज ओलंपियाड में स्वर्ण पदज जीतने वाले भारत के खिलाड़ियों की रैंकिंग में इसका असर साफ दिखाई दे रहा है । भारत के लिए पुरुष वर्ग में अर्जुन एरीगैसी ओरु डी गुकेश नें और महिला वर्ग में दिव्या देशमुख नें अपने खेल जीवन की सर्वोच्च विश्व रैंकिंग हासिल कर ली है । पुरुष वर्ग में नॉर्वे के 34 वर्षीय मैगनस कार्लसन 2831 रेटिंग के साथ पहले और यूएसए के 37 वर्षीय हिकारु नाकामुरा 2802 रेटिंग के साथ दूसरे स्थान पर बने हुए है । वहीं तीसरे स्थान पर 2797 रेटिंग अंको के साथ भारत के 21 वर्षीय अर्जुन एरिगासी नें जगह बना ली है उन्होने यूएसए के फबियानों करूआना को 2796 अंको के साथ चौथे स्थान पर पहुंचा दिया है , वहीं आगले माह विश्व शतरंज चैंपियनशिप खेलने जा रहे भारत के 18 वर्षीय डी गुकेश नें भी 2794 अंको के साथ अपने खेल जीवन में पहली बार शीर्ष 5 में जगह बना ली है , अन्य भारतीय खिलाड़ियों में विश्वनाथन आनंद 2751 अंको के साथ 11वें , 2746 रेटिंग एक साथ प्रज्ञानन्दा 12वें , 2726 रेटिंग के साथ विदित 26वें, 2698 रेटिंग के साथ अरविंद चितांबरम 33वें और 2688 रेटिंग के साथ पेंटाला हरीकृष्णा 42वें स्थान पर है । महिला वर्ग में विश्व रैंकिंग में शीर्ष 10 में तो कोई खास बदलाव नहीं आया है पर शतरंज ओलंपियाड में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाली भारत के दिव्या देशमुख 2501 रेटिंग के साथ पहली बार 2500 रेटिंग पर और विश्व रैंकिंग में 11वें स्थान पर पहुँच गयी है , 2530 अंको के साथ अभी भी कोनेरु हम्पी दुनिया की छठे और भारत की शीर्ष खिलाड़ी बनी हुई है । 2493 अंको के साथ हरिका द्रोणावल्ली 14वें ,2487 अंको के साथ आर वैशाली 15वें , 2396 अंको के साथ तानिया 54वें और 2392 अंको के साथ वैशाली 58वें स्थान पर है । टीम रैंकिंग में भारत नें महिला पुरुष और मिक्स वर्ग में अपना दूसरा स्थान कायम रखा है , पुरुष वर्ग में यूएसए 2730 अंक , भारत 2717 अंक और चीन 2678 अंको के साथ शीर्ष टीम में है जबकि महिला वर्ग में चीन 2486 अंक, भारत 2421 अंक और उक्रेन 2391 अंक के साथ शीर्ष तीन में शामिल है ।

ईरानी कप : भारतीय टीम से लौटे सरफराज खान ने ठोका शतक, लगाए 14 चौके

स्पोर्ट्स डेस्क । सरफराज खान ने ईरानी कप में मुंबई की टीम में वापसी करते हुए शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने 2 अक्टूबर बुधवार को शेष भारत के खिलाफ अपना 15वां प्रथम श्रेणी शतक बनाया। लखनऊ के एकाना स्टेडियम में खेले जा रहे मैच के दूसरे दिन लंच से पहले सरफराज ने 150 गेंदों में अपना शतक पूरा किया।

मुंबई के इस बल्लेबाज को हाल ही में बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया था। ईरानी कप में खेल शुरू होने से पहले उन्हें टीम से रिलीज कर दिया गया था। सरफराज ने बांग्लादेश के खिलाफ किसी भी मैच में हिस्सा नहीं लिया, क्योंकि केएल राहुल उनसे आगे थे। सरफराज पहले दिन मुंबई के 4 विकेट पर 139 रन पर बल्लेबाजी करने आए थे। इसके बाद उन्होंने अजिंक्य रहाणे के साथ मिलकर गत रणजी ट्रॉफी चैंपियन के लिए मैच को संभाला।

रहाणे और सरफराज ने पहले दिन के अंत तक 98 रन जोड़े और सुनिश्चित किया कि मुंबई 4 विकेट पर 237 रन बनाए। दूसरे दिन दोनों ने 43 रन और जोड़े, लेकिन रहाणे 97 रन बनाकर यश दयाल की गेंद पर आउट हो गए और शतक से चूक गए। इसके बाद सरफराज के साथ शम्स मुलानी क्रीज पर आए, लेकिन वह ज्यादा देर तक नहीं टिक पाए और मुकेश कुमार ने उन्हें बोल्ड कर दिया। इसका मतलब था कि सरफराज को अब चीजों को संभालना था और खुलकर रन बनाने थे। उनके साथ तनुश कोटियन आए और दोनों ने 58 रन बनाए और मुंबई को लखनऊ में लंच तक 6 विकेट पर 338 रन तक पहुंचाया।

पिछले ओवर में करीबी मुकाबले से बचने के बाद सरफराज ने 92वें ओवर में अपना शतक पूरा किया। मुंबई के बल्लेबाज ने लंच तक 155 गेंदों पर 103 रन बनाकर नाबाद रहे, जिसमें उनके नाम 14 चौके शामिल थे।

'मैं मैदान पर जडेजा से परेशान हो जाता हूँ क्योंकि...': स्टीव स्मिथ

मुंबई (एजेंसी)। शीर्ष ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने खुलासा किया कि भारत के स्टार ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा मैदान पर उन्हें परेशान करते हैं क्योंकि वह एक अच्छे खिलाड़ी हैं और हमेशा लड़ाई में शामिल होने का कोई न कोई तरीका ढूंढ ही लेते हैं। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के करीब आते ही ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों ने अपने विचार साझा कर रहे हैं कि उन्हें टीम इंडिया में कौन सबसे ज्यादा परेशान करने वाला या मजेदार लगता है।

ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्मिथ ने कहा, 'मैं मैदान पर जडेजा से परेशान हो जाता हूं, सिर्फ इसलिए क्योंकि वह एक बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं। वह हमेशा लड़ाई में शामिल होने का कोई न कोई तरीका ढूंढ ही लेते हैं, चाहे वह रन बनाना हो, विकेट लेना हो या शानदार कैच लेना हो। यह कभी-कभी थोड़ा परेशान करने वाला हो सकता है, लेकिन वह एक बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं।'

ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड ने स्मिथ का समर्थन करते हुए कहा, 'शायद जडेजा।' ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 17 टेस्ट मैचों में जडेजा ने 23 पारियों में 28.50 की औसत से 570 रन बनाए हैं जिसमें पांच अर्द्धशतक और 81 का सर्वश्रेष्ठ स्कोर शामिल है। ऑस्ट्रेलिया में उन्होंने पांच पारियों में 43.75 की औसत से 175 रन बनाए हैं, जिसमें दो अर्द्धशतक शामिल हैं। उन्होंने टेस्ट मैचों में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कुल 89 विकेट लिए हैं जिनमें से 14 ऑस्ट्रेलिया में आए हैं।

इस बीच, ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन को भारतीय टीम में एक और खिलाड़ी मजेदार लगा। उन्होंने कहा, 'ट्रिगर। मैं इसे बाद के लिए बचाकर रखूंगा, अन्यथा मेरे पीछे बहुत सारे भारतीय खिलाड़ी पड़ जाएंगे। लेकिन मुझे हमेशा सबसे मजेदार ऋषभ पंत लगता है। वह हमेशा मजाकिया रहता है, खूब हंसता है और खेल को सही भावना से खेलता है।' पंत का ऑस्ट्रेलिया में रिकॉर्ड शानदार है, उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई धरती पर 7 मैचों और 12 पारियों में 62 से अधिक की औसत से 624 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और दो अर्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 159* है।

ट्रेविस हेड ने विराट कोहली की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि बहुत से लोग विराट का नाम लेंगे, सिर्फ इसलिए कि वह कितने अच्छे हैं। वह हमेशा रन बनाते रहते हैं और उनकी ऊर्जा हमेशा बनी रहती है। वह हमेशा आपके साथ रहते हैं।' विराट का ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट रिकॉर्ड शानदार है, उन्होंने 13 टेस्ट में 54.08 की औसत से 1,352 रन बनाए हैं, जिसमें 25 पारियों में छह शतक और चार अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 169 है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 25 टेस्ट में कुल मिलाकर उन्होंने 44 पारियों में आठशतक और पाँच अर्द्धशतक के साथ 47.48 की औसत से 2,042 रन बनाए हैं। ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर नाथन लियोन ने मजाकिया अंदाज में टिप्पणी की, 'मैं सभी भारतीय खिलाड़ियों से परेशान हो जाता हूं।'

गौर हो कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर सीरीज 22 नवंबर को पर्थ में पहले टेस्ट के साथ शुरू होगी। 6 से 10 दिसंबर को एडिलेड ओवल में होने वाला दूसरा टेस्ट डे-नाइट प्रारूप में खेला जाएगा। इसके बाद प्रशंसक तीसरे टेस्ट के लिए ब्रिस्बेन के गाबा की ओर अपना ध्यान करेंगे जो 14 से 18 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा। मेलबर्न के प्रसिद्ध मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर 26 से 30 दिसंबर के लिए निर्धारित पारंपरिक बॉक्सिंग डे टेस्ट श्रृंखला को उसके अंतिम चरण में ले जाएगा। 3 से 7 जनवरी तक सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर होने वाला पांचवां और अंतिम टेस्ट श्रृंखला का अंत करेगा।

पाकिस्तान के हॉकी खिलाड़ी सोहेल अब्बास मलेशिया के ड्रैग फ्लिक कोच बने

कराची । पाकिस्तान के महान पेनल्टी कॉर्नर विशेषज्ञ सोहेल अब्बास ने मलेशिया हॉकी परिसंघ के साथ ड्रैग फ्लिक कोच के तौर पर एक साल का करार किया है। सोहेल ने पाकिस्तान हॉकी महासंघ के साथ कोई कोचिंग करार कभी नहीं किया और दो बार पेशकश मिलने पर ठुकरा चुके हैं। वह देश के पूर्व ओलंपियनों और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों से भी दूर रहते हैं। पाकिस्तान के लिए उन्होंने 311 मैचों में 348 गोल किए हैं। वह मलेशिया के मुख्य कोच सुरजीत सिंह के साथ काम करेंगे।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

वर्ष के चार नवरात्रों में चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन के होते हैं, परंतु प्रसिद्धि में चैत्र और आश्विन के नवरात्र ही मुख्य माने जाते हैं। नवरात्र में देवी माँ के व्रत रखे जाते हैं। स्थान-स्थान पर देवी माँ की मूर्तियाँ बनाकर उनकी विशेष पूजा की जाती है। मान्यता है कि नवरात्र में महाशक्ति की पूजा कर श्रीराम ने अपनी खोई हुई शक्ति पाई, इसलिए इस समय आदिशक्ति की आराधना पर विशेष बल दिया गया है।

ऊर्जा का उत्सव नवरात्री

नवरात्रि एक हिंदू पर्व है। नवरात्रि संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है नौ रातें। यह पर्व साल में चार बार आता है। चैत्र, आषाढ, अश्विन, पोषप्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातो में तीन देवियों - महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वतीया सरस्वतीकि तथा दुर्गा के नौ स्वरुपों की पूजा होती है जिन्हे नवदुर्गा कहते हैं। नौ देवियाँ है - श्री शैलपुत्री, श्री ब्रह्मचारिणी, श्री चंद्रघंटा, श्री कुष्मांडा, श्री स्कंदमाता, श्री कात्यायनी, श्री कालरात्रि, श्री महागौरी, श्री सिद्धिदात्री।

शक्ति की उपासना का पर्व शारदेय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। सर्वप्रथम श्रीरामचंद्रजी ने इस शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ समुद्र तट पर किया था और उसके बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान किया और विजय प्राप्त की । तब से असत्य, अधर्म पर सत्य, धर्म की जीत का पर्व दशहरा मनाया जाने लगा। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है। माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं । नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। नवदुर्गा और दस महाविधाओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दस महाविधाएँ अनंत सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, गंधर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिए लालायित रहते हैं।

प्रमुख कथा

लंका-युद्ध में ब्रह्माजी ने श्रीराम से रावण वध के लिए चंडी देवी का पूजन कर देवी को प्रसन्न करने को कहा और बताए अनुसार चंडी पूजन और हवन हेतु दुर्लभ एक सौ आठ नीलकमल की व्यवस्था की गई। वहीं दूसरी ओर रावण ने भी अमरता के लोभ में विजय कामना से चंडी पाठ प्रारंभ किया। यह बात इंद्र देव ने पवन देव के माध्यम से श्रीराम के पास पहुँचाई और परामर्श दिया कि चंडी पाठ यथासभंव पूर्ण होने दिया जाए। इधर हवन सामग्री में पूजा स्थल से एक नीलकमल रावण की मायावी शक्ति से गायब हो गया और राम का संकल्प टूटता-सा नजर आने लगा। भय इस बात का था कि देवी माँ रुष्ट न हो जाएँ। दुर्लभ नीलकमल की व्यवस्था तत्काल असंभव थी, तब भगवान राम को सहज ही स्मरण हुआ कि मुझे लोग कमलनयन नवकंच लोचन कहते हैं, तो क्यों न संकल्प पूर्ति हेतु एक नेत्र अर्पित कर दिया जाए और प्रभु राम जैसे ही तूणीर से एक बाण निकालकर अपना नेत्र निकालने के लिए तैयार हुए, तब देवी ने प्रकट हो, हाथ पकड़कर कहा- राम मैं प्रसन्न हूँ और विजयश्री का आशीर्वाद दिया। वहीं रावण के चंडी पाठ में यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों की सेवा में ब्राह्मण बालक का रूप धर कर हनुमानजी सेवा में जुट गए। निःस्वार्थ सेवा देखकर ब्राह्मणों ने हनुमानजी से वर माँगने को कहा। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- प्रभु, आप प्रसन्न हैं तो जिस मंत्र से यज्ञ कर रहे हैं, उसका एक अक्षर मेरे कहने से बदल दीजिए। ब्राह्मण इस रहस्य को समझ नहीं सके और तथास्तु कह दिया। मंत्र में जयादेवी... भूर्तिहरिणी में ह के स्थान पर क उच्चारित करें, यही मेरी इच्छा है। भूर्तिहरिणी यानी कि प्राणियों की पीड़ा हरने वाली और करिणी का अर्थ हो गया प्राणियों को पीड़ित करने वाली, जिससे देवी रुष्ट हो गईं और रावण का सर्वनाश करवा दिया। हनुमानजी महाराज ने श्लोक में ह की जगह क करवाकर रावण के यज्ञ की दिशा ही बदल दी।

अन्य कथाएं

इस पर्व से जुड़ी एक अन्य कथा अनुसार देवी दुर्गा ने एक भैंस रूपी असुर अर्थात महिषासुर का वध किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया। उसको वरदान देने के बाद देवताओं को चिंता हुई कि वह अब अपनी शक्ति का गलत प्रयोग करेगा। और प्रत्याशित प्रतिफल स्वरूप महिषासुर ने नरक का विस्तार स्वर्ग के द्वार तक कर दिया और उसके इस कृत्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए। महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए हैं और स्वयं स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा है। तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की। ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और कहा जाता है कि इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गईं थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततः महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं।

निर्माणाधीन मूर्तियां

चौमासे में जो कार्य स्थगित किए गए होते हैं, उनके आरंभ के लिए साधन इसी दिन से जुटाए जाते हैं। क्षत्रियों का यह बहुत बड़ा पर्व है। इस दिन ब्राह्मण सरस्वती-पूजन तथा क्षत्रिय शस्त्र-पूजन आरंभ करते हैं। विजयादशमी या दशहरा एक राष्ट्रीय पर्व है। अर्थात आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल तारा उदय होने के समय विजयकाल रहता है। यह सभी कार्यों को सिद्ध करता है। आश्विन शुक्ल दशमी पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध और श्रवण नक्षत्रयुक्त सूर्योदयव्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। अपराह्न काल, श्रवण नक्षत्र तथा दशमी का प्रारंभ विजय यात्रा का मुहूर्त माना गया है। दुर्गा-विसर्जन, अपराजिता पूजन, विजय-प्रयाग, शमी पूजन तथा नवरात्र-पारण इस पर्व के महान कर्म हैं। इस दिन संध्या के समय नीलकंठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। क्षत्रिय/राजपूतों इस दिन प्रातः स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर संकल्प मंत्र लेते हैं। इसके पश्चात देवताओं, गुरुजन, अस्त्र-शस्त्र, अश्व आदि के यथाविधि पूजन की परंपरा है।

कैसे करें घट स्थापना

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शारदीय नवरात्रि की धूम नौ दिनों तक रहेगी। इन दिनों मां भगवती के नौ रूपों का पूजन-अर्चन होगा। आइए जानते हैं घटस्थापना कैसे करें -

- घटस्थापना हमेशा शुभ मुहूर्त में करनी चाहिए।
- नित्य कर्म और स्नान के बाद ध्यान करें।
- इसके बाद पूजन स्थल से अलग एक पाटे पर लाल व सफेद कपड़ा बिछाएं।
- इस पर अक्षत से अष्टदल बनाकर इस पर जल से भरा कलश स्थापित करें।
- इस कलश में शतावरी जड़ी, हलकुंड, कमल गट्टे व रजत का सिक्का डालें।
- दीप प्रज्ज्वलित कर इष्ट देव का ध्यान करें।
- तत्पश्चात देवी मंत्र का जाप करें।
- अब कलश के सामने गेहूं व जौ को मिट्टी के पात्र में रोंपें।
- इस ज्वारे को माताजी का स्वरूप मानकर पूजन करें।
- अंतिम दिन ज्वारे का विसर्जन करें।

नौ दिन कैसे करें कन्या-पूजन

नवरात्रि यानी सौन्दर्य के मुखरित होने का पर्व। नवरात्रि यानी उमंग से खिल-खिल जाने का पर्व। कहते हैं, नौ दिनों तक दैवीय शक्ति मनुष्य लोक के भ्रमण के लिए आती है। इन दिनों की गई उपासना-आराधना से देवी भक्तों पर प्रसन्न होती है। लेकिन पुराणों में वर्णित है कि मात्र श्लोक-मंत्र-उपवास और हवन से देवी को प्रसन्न नहीं किया जा सकता। इन दिनों 2 से लेकर 5 वर्ष तक की नन्ही कन्याओं के पूजन का विशेष महत्व है। नौ दिनों तक इन नन्ही कन्याओं को सुंदर गिफ्ट्स देकर इनका दिल जीता जा सकता है। इनके माध्यम से नवदुर्गा को भी प्रसन्न किया जा सकता है। पुराणों की दृष्टि से नौ दिनों तक कन्याओं को एक विशेष प्रकार की भेंट देना शुभ होता है।

- प्रथम दिन इन्हें फूल की भेंट देना शुभ होता है। साथ में कोई एक श्रृंगार सामग्री अवश्य दें। अगर आप मां सरस्वती को प्रसन्न करना चाहते है तो श्वेत फूल अर्पित करें। अगर आप के दिल में कोई भौतिक कामना है तो लाल पुष्प देकर इन्हें खुश करें। (उदाहरण के लिए - गुलाब, चंपा, मोगरा, गेंदा, गुड़हल)
- दूसरे दिन फल देकर इनका पूजन करें। यह फल भी सांसारिक कामना के लिए लाल अथवा पीला और वैराग्य की प्राप्ति के लिए केला या श्रीफल हो सकता है। याद रखें कि फल खट्टे ना हो।
- तीसरे दिन मिठाई का महत्व होता है। इस दिन अगर हाथ की बनी खीर, हलवा या केशरिया चावल बना कर खिलाए जाएं तो देवी प्रसन्न होती है।
- चौथे दिन इन्हें वस्त्र देने का महत्व है लेकिन सामर्थ्य अनुसार रूमाल या रंगबिरंगे रीबन दिए जा सकते हैं।
- पांचवे दिन देवी से सौभाग्य और संतान प्राप्ति की मनोकामना की जाती है। अत- कन्याओं को पांच प्रकार की श्रृंगार सामग्री देना अत्यंत शुभ होता है। इनमें बिंदिया, चूड़ी, मेहंदी, बालों के लिए क्लिप्स, सुगंधित साबुन, काजल, नेलपॉलिश, टैल्कम पावडर इत्यादि हो सकते हैं।
- छठे दिन बच्चियों को खेल-सामग्री देना चाहिए। आजकल बाजार में खेल सामग्री की अनेक वैरायटी उपलब्ध है। पहले यह रिवाज पांचे, रस्सी और छोटे-मोटे खिलौनों तक सीमित था। अब तो ढेर सारे विकल्प मौजूद है।
- सातवां दिन मां सरस्वती के आह्वान का होता है। अत- इस दिन कन्याओं को शिक्षण सामग्री दी जानी चाहिए। आजकल स्टेशनरी बाजार में विभिन्न प्रकार के पेन, स्केच पेन, पेंसिल, कॉपी, ड्रॉईंग बुक्स, कंपास, वाटर बॉटल, कलर बॉक्स, लंच बॉक्स उपलब्ध है।
- आठवां दिन नवरात्रि का सबसे पवित्र दिन माना जाता है। इस दिन अगर कन्या का अपने हाथों से श्रृंगार किया जाए तो देवी विशेष आशीर्वाद देती है। इस दिन कन्या के दूध से पैर पूजने चाहिए। पैरों पर अक्षत, फूल और कुंकुम लगाना चाहिए। इस दिन कन्या को भोजन कराना चाहिए और यथासामर्थ्य कोई भी भेंट देनी चाहिए। हर दिन कन्या-पूजन में दक्षिणा अवश्य दें।
- नौवें दिन खीर, ग्वारफली और दूध में गूंथी पूरियां कन्या को खिलानी चाहिए। उसके पैरों में महावर और हाथों में मेहंदी लगाने से देवी पूजा संपूर्ण होती है। अगर आपने घर पर हवन का अयोजन किया है तो उसके नन्हे हाथों से उसमें समिधा अवश्य डलवाएं। उसे इलायची और पान का सेवन कराएं।

नवरात्रि के चमत्कारिक दिव्य मंत्र

वर्तमान में मनुष्य ने अपने जीवन को इतनी आवश्यकताओं से घेर लिया है कि वह उनमें ही उलझा रहता है। ऐसे मनुष्यों के लिए समस्याओं को हल करने के लिए सरलतम मंत्र दे रहे हैं। जो नवरात्रि में करने से सफलता मिलती है एवं समस्या से छुटकारा मिलता है। ऐसे पावन नौ दिनों के लिए दिव्य मंत्र दिए जा रहे हैं, जिनके विधिवत परायण करने से स्वयं के नाना प्रकार के कार्य व सामूहिक रूप से दूसरों के कार्य पूर्ण होते हैं। इन मंत्रों को नौ दिनों में अवश्य जाप करें। इनसे यश, सुख, समृद्धि, पराक्रम, वैभव, बुद्धि, ज्ञान, सेहत, आयु, विद्या, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य सभी की प्राप्ति होती है। विपत्तियों का नाश होगा।

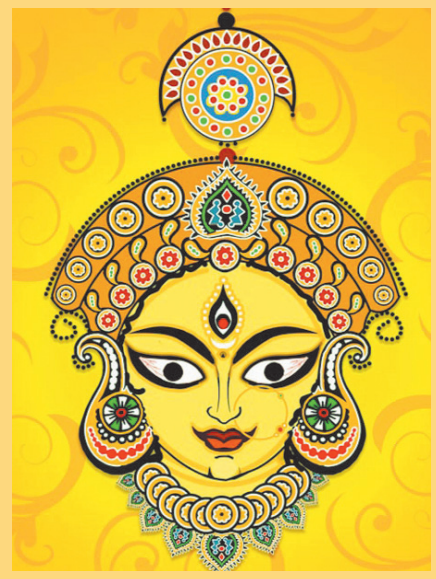

विपत्ति-नाश के लिए

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यापहरे देवि नारायणि नमोस्तुते।।

भय नाश के लिए

सर्वस्वरूपे सर्वेश सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि, दुर्गे देवि नमोस्तुते।।

पाप नाश तथा भक्ति की प्राप्ति के लिए

नमेभ्य सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

हर प्रकार के कल्याण के लिए

सर्वमंगल्यमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते।।

धन, पुत्रादि प्राप्ति के लिए

सर्वबाधाविनिर्मुक्तो-धनधान्यसुतान्वित
मनुष्यों मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय।।

रक्षा पाने के लिए

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खंडे न चाम्बिके।
घण्टास्वनेन न पाहि चापज्यानि स्वनेन च।।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए

त्वं वैष्णवी शक्तिरन्तवीर्या।
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेत
त्वं वै प्रसन्ना भूवि मुक्ति हेतु।।

बाधा व शांति के लिए

सर्वबाधाप्रमशन त्रैलोक्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्यद्वैरिविनाशन्नम।।

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिए

पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम
तारिणी दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम।।

संक्षिप्त समाचार

अफगानिस्तान में हमलों को लेकर तालिबान की पाकिस्तान को चेतावनी- आतंकियों को ना दे पनाह

काबुल, एजेंसी। तालिबान अधिकारियों ने अफगानिस्तान में हाल ही में हुए घातक हमलों के लिए जिम्मेदार इस्लामिक स्टेट आतंकी समूह के अहम सदस्यों को कैप्चर कर लिया है। तालिबान के एक प्रवक्ता ने सोमवार को इस बात की जानकारी दी है। तालिबान ने पड़ोसी देश पाकिस्तान को संगठन को पनाह देने का दोषी ठहराया है। अफगानिस्तान में 2021 में तालिबान ने सत्ता में की थी। हालांकि इस्लामिक स्टेट का क्षेत्रीय रूप, जिसे इस्लामिक स्टेट खुरासान (आईएस- के) के रूप में जाना जाता है तालिबानी हुकूमत के लिए मुख्य चुनौती के रूप में उभरा है। बड़े पैमाने पर किए गए ऑपरेशन के बाद आईएस- के के हमलों की संख्या को काफी हद तक कम हो गई है। हालांकि इस साल आईएस- के के आतंकियों ने कई जगह गोलीबारी और बम विस्फोट की की घटना को अंजाम दिया है। तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा कि विशेष बलों ने विद्रोही समूह के प्रमुख सदस्यों को पकड़ लिया है जिसने इस महीने काबुल आत्मघाती बम विस्फोट का दावा किया था जिसमें छह लोग मारे गए थे। उन्होंने कहा कि आत्मघाती हमलावर ने पाकिस्तान में एक प्रशिक्षण शिविर से अफगानिस्तान में घुसपैठ किया था। तालिबान ने बताया कि कई छापों में गिरफ्तार किए गए दूसरे आतंकी भी पाकिस्तान के ही हैं। मुजाहिद ने कहा कि इस कार्रवाई से सुन्नी जिहादी समूह को अफ़गानिस्तान से खदेड़ दिया गया लेकिन उन्होंने पाकिस्तान में नए ऑपरेशनल बेस और ट्रेनिंग कैंप स्थापित कर लिए हैं। इस टिप्पणी से काबुल और पाकिस्तान के बीच संबंधों में और खटास आने की संभावना है। पाकिस्तान ने अपने क्षेत्र में बढ़ते हमलों के लिए अफ़गानिस्तान को दोषी ठहराया है और दावा किया कि तालिबान पाक तालिबान विद्रोहियों को दबाने में विफल रहा है।

अमेरिका में दुष्कर्म मामले में शिक्षिका को सजा

वाशिंगटन, एजेंसी। इडाहो के एक हाई स्कूल के शिक्षिका को नाबालिग के साथ यौन उत्पीड़न के मामले में दोषी पाए जाने पर कम से कम दो साल और अधिकतम 20 साल की जेल की सजा सुनाई गई है। नाबालिग के साथ यौन उत्पीड़न के मामले में अदालत के रिकॉर्ड के अनुसार, 36 साल की जेसिका लॉसन ने एक याचिका समझौते के तहत यौन उत्पीड़न के दो मामलों को स्वीकार किया। हालांकि, समझौते के तहत नाबालिग को शराब उपलब्ध कराने और नियंत्रित पदार्थ पहुंचाने के अतिरिक्त आरोपों को खारिज कर दिया गया। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, लॉसन को पिछले साल नवंबर में इडाहो के सेंट एंथोनी में उस समय गिरफ्तार किया गया था, जब नाबालिग कार चला रहा था और वह खुद पास की सीट पर बैठी थी। पुलिस का कहना है कि महिला ने लड़के को कार चलाने का निर्देश इसलिए दिया था क्योंकि वह बहुत नशे में थी। जब पुलिस ने कार रोकी तो देखा की टेललाइट टूटी हुई है। लड़के ने कथित तौर पर ड्रग रखने की बात कबूल की थी। बच्चे के माता-पिता ने बाद में पुलिस को बताया कि लॉसन उसे रात में ले गई थी और यौन उत्पीड़ने से पहले उसे शराब और ड्रग दिया था। साउथ फ्रेमोंट हाई स्कूल की पूर्व शिक्षिका लॉसन को कम से कम दो साल जेल में रहना होगा। रिपोर्ट के अनुसार, उसे पीड़ित से 20 साल तक संपर्क न करने का आदेश भी दिया गया है।

भारत में वॉन्टेड जाकिर नाइक का पाकिस्तान में भव्य स्वागत, लाइन में लगीं बड़ी हस्तियां

इस्लामाबाद, एजेंसी। इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाइक पाकिस्तान पहुंचे हैं। यहां उनका भव्य स्वागत हुआ और बड़ी राजनीतिक हस्तियों से मुलाकात की। खास बात है कि नाइक भारत में वॉन्टेड की लिस्ट में भी शामिल है। खबर है कि नाइक कुछ समय के लिए पाकिस्तान में ही रहेगा और कार्यक्रमों में शामिल होगा। हाल ही में उसने भारत में प्रस्तावित वक्फ बोर्ड बिल के खिलाफ मुस्लिम समुदाय से एकजुट होने की अपील की थी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, नाइक का स्वागत रेड कार्पेट से किया गया। वह सोमवार को राजधानी इस्लामाबाद पहुंचा है और 28 अक्टूबर तक मुल्क में रहेगा। नाइक का स्वागत करने प्रधानमंत्री के युवा कार्यक्रम के अध्यक्ष राणा मशहूद, धार्मिक मामलों के मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव सैयद अता-उर-रहमान, धार्मिक मामलों के संसदीय सचिव शमशेर मजारी समेत कई लोग पहुंचे थे। इसके बाद नाइक ने पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री मोहम्मद इशाक डार के साथ भी तस्वीर साझा की। खबर है कि नाइक इस्लामाबाद, कराची और लाहौर में जनता के सामने भाषण देगा। साल 2016 से ही वह मलेशिया में रह रहा है। फिलहाल, भारत ने उसके प्रत्यर्पण के लिए अनुरोध किया है, लेकिन मलेशिया की तरफ से इसपर सहमति नहीं दी गई है। नाइक कथित धन शोधन मामले और नफरती भाषणों के जरिए चरमपंथ भड़काने के मामले में भारत के लिए वांछित है। वह 2016 में भारत से चला गया था। इस्लामिक उपदेशक को महातिर मोहम्मद के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती सरकार ने मलेशिया में स्थायी निवास की अनुमति दी थी।

सत्ता परिवर्तन को साजिश कहना युवा पीढ़ी के बलिदान को कमतर आंकना: मोहम्मद तौहीद हुसैन

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने अमेरिका पर उनकी सरकार गिराने की साजिश रचने का आरोप लगाया था। अब जब इसे लेकर बांग्लादेश की मौजूदा सरकार के विदेश मामलों के सलाहकार मोहम्मद तौहीद हुसैन से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि वह इस पर कोई टिप्पणी नहीं करेंगे क्योंकि वह नहीं चाहते कि युवा पीढ़ी के बलिदान को कमतर आंका जाए।

सत्ता परिवर्तन को साजिश कहना युवा पीढ़ी के बलिदान को कमतर आंकना : मोहम्मद तौहीद हुसैन ने कहा कि छात्रों और अन्य युवाओं को एक निरंकुश शासन को लोकतांत्रिक और समावेशी शासन में बदलने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है। युवा पीढ़ी के बलिदान के चलते ही सरकार बदली और शेख हसीना को इस्तीफा देकर देश छोड़कर भागना पड़ा। यह अचानक हुआ आंदोलन था, जो सरकार के सत्ता से बेदखल होने पर ही खत्म हुआ।

हिंदू-अल्पसंख्यकों पर हमलों को लेकर क्या बोले: बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों और हिंदुओं पर हमले की घटनाओं पर मोहम्मद तौहीद हुसैन ने कहा कि शेख हसीना के जाने के तुरंत बाद प्रशासन में एक खालीपन आ गया था और पुलिसिंग की भी समस्या थी क्योंकि पुलिस को युवा पीढ़ी के खिलाफ रखा गया था, इसलिए जब शेख हसीना चली गईं, तो उस समय तनाव और भावनाओं का ज्वार बहुत अधिक था, जिसके चलते कुछ घटनाएं हुईं, लेकिन इसे हिंदू

विरोधी आंदोलन करना पूरी तरह से गलत है। हिंसा ज्यादातर अवामी लीग के वफ़ादारों के ख़िलाफ़ हुई। आंदोलन के दौरान कुछ हिंसा हुई, लेकिन वह इस आधार पर नहीं थी कि कोई हिंदू था या मुसलमान। अगर आप धर्म के हिसाब से गिनें, तो उस समय हिंदुओं की तुलना में मुसलमानों पर ज़्यादा हमले हुए, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अवामी लीग समर्थकों के ख़िलाफ़ आंदोलन चल रहा था जिसे सरकार संभालने के तुरंत बाद रोक लिया गया था। मुझे नहीं लगता कि इस समय इस देश में कोई शिकायत करेगा कि ऐसी कोई कार्रवाई हुई है।

बांग्लादेश में मनाया जाएगा दुर्गा पूजा उत्सव : बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार मोहम्मद तौहीद हुसैन से जब पूछा गया कि क्या देश में दुर्गा पूजा मनाई जाएगी, तो उन्होंने कहा, यह बहुत अजीब बात है। हो सकता है कि कुछ लोग दुर्गा पूजा को पसंद न करें, लेकिन इस देश में सदियों से दुर्गा पूजा होती आ रही है और ऐसा कोई मौका नहीं आया जब दुर्गा पूजा न हुई हो। निश्चित रूप से, जो श्रद्धालु दुर्गा पूजा करना चाहते हैं, वो कर सकते हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। भारत-बांग्लादेश रिश्तों पर भी बोले बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार मोहम्मद तौहीद हुसैन ने हाल ही में न्यूयॉर्क में भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात की थी। भारत-बांग्लादेश के रिश्तों पर उन्होंने कहा कि दोनों देशों को एक दूसरे के साथ अच्छे कामकाजी रिश्ते रखने चाहिए। मेरी भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात हुई थी, जिसमें वे भी दोनों देशों के कामकाजी रिश्ते बेहतर रखने के पक्ष में थे। हालांकि उनके साथ शेख हसीना को लेकर कोई चर्चा नहीं हुई।

यमन के हुती विद्रोहियों ने अमेरिका निर्मित एक और ड्रोन को मार गिराने का दावा किया

दुबई , एजेंसी। यमन के हुती विद्रोहियों ने दावा किया कि उन्होंने देश के ऊपर अमेरिका निर्मित एक और 'एमक्यू-9 रीपर' ड्रोन को मार गिराया। उन्होंने वीडियो भी साझा किया जिसमें कथित तौर पर सतह से हवा में मार करने वाली एक मिसाइल ड्रोन को निशाना बनाती दिखती है। अमेरिकी सेना ने इस बारे में तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की है। दावा ऐसे समय किया गया है जब गाजा पट्टी में इजराइल-हमास युद्ध को लगभग एक साल होने वाला है। हुती विद्रोही लाल सागर से यात्रा करने वाले जहाजों को निशाना बनाते रहे हैं और अमेरिका के नेतृत्व वाले हवाई हमलों ने यमन में हुती की स्थिति को प्रभावित किया है। उन्होंने इजराइल को निशाना बनाकर मिसाइलें दागना जारी रखा है, जिसके जवाब में इस सप्ताह के अंत में बंदरगाह शहर होदेइदा पर इजराइल ने हवाई हमले किए। हुती संचालित प्रसारक अल-मसीरा ने 'एमक्यू-9' को मार गिराने का दावा किया। इससे संबंधित एक वीडियो ऑनलाइन प्रसारित हुआ जिसमें कथित तौर पर मिसाइल यमन के सादा प्रांत के ऊपर ड्रोन से टकराती दिखी। ऑनलाइन आई एक तस्वीर में 'एमक्यू-9' से मिलता-जुलता मलबा दिखा। अमेरिकी सेना ने एसोसिएटेड प्रेस की टिप्पणी के अनुरोध का जवाब नहीं दिया। इससे पहले, अमेरिकी सेना ने स्वीकार किया था कि हुती विद्रोहियों ने सितंबर में दो 'एमक्यू-9' को मार गिराया।

रुपये के बजाय अमेरिकी डॉलर लेकर आएं, पाकिस्तान की पंजाब सरकार का भारतीय सीखों को सलाह

इस्लामाबाद, एजेंसी। सिख मंत्री रमेश सिंह अरोड़ा ने यहां कहा कि हमें कई शिकायतें मिली हैं कि अपने पवित्र स्थानों के लिए पाकिस्तान जाने वाले भारतीय सिखों का शोषण मौजूदा विनिमय दर से काफी कम (राशि) देकर किया जाता है। अरोड़ा, जो पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान (अध्यक्ष) भी हैं। भारत से सिखों के शोषण के बारे में कई शिकायतें मिलने के बाद सलाह जारी की। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार ने सोमवार को देश की यात्रा करने के इच्छुक भारतीय सिखों को भारतीय मुद्रा के बजाय अमेरिकी डॉलर ले जाने की सलाह दी। पंजाब के पहले सिख मंत्री रमेश सिंह अरोड़ा ने यहां कहा कि हमें कई शिकायतें मिली हैं कि अपने पवित्र स्थानों के लिए पाकिस्तान जाने वाले भारतीय सिखों का शोषण मौजूदा विनिमय दर से काफी कम (राशि) देकर किया जाता है। अरोड़ा, जो पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान (अध्यक्ष) भी हैं। भारत से सिखों के शोषण के बारे में कई शिकायतें मिलने के बाद सलाह जारी की। मंत्री ने यह भी कहा कि यहां आने वाले भारतीय सिखों को समूह नेताओं को यहां सुविधाओं के लिए कोई अतिरिक्त राशि नहीं देनी चाहिए। मंत्री ने कहा कि पहले सिख गुरु, गुरु नानक देव की 555वीं जयंती पर उत्सव में भाग लेने के लिए 14 नवंबर को बड़ी संख्या में भारतीय सिख यहां आने वाले हैं। पिछले साल, लगभग 3,000 भारतीय सिख इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वाघा सीमा के माध्यम से यहां पहुंचे थे। कई सिख पाकिस्तान के करतारपुर मंदिर को उस स्थान के रूप में देखते हैं जहां उनका धर्म शुरू हुआ था: इसके संस्थापक, गुरु नानक का जन्म 1469 में पूर्वी पाकिस्तानी शहर लाहौर के पास एक छोटे से गांव में हुआ था। लेकिन वहां पहुंचने के लिए, यात्रियों को पहले मुश्किल से मिलने वाला वीजा लेना होगा।

ब्रिटेन का अंतिम कोयला बिजली संयंत्र बंद, 142 साल पुरानी व्यवस्था खत्म; शैंक्स ने कहा- हम गुजरी पीढ़ियों के ऋणी

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन का आखिरी कोयला आधारित बिजली संयंत्र सोमवार को बंद हो गया है। इससे देश में औद्योगिक क्रांति को जन्म देने वाली कोयला विद्युत की 142 वर्ष पुरानी व्यवस्था खत्म हो जाएगी। मध्य इंग्लैंड स्थित 'रैटक्लिफ-ऑन-सोर स्टेशन' अपनी अंतिम पाली के साथ आधी रात से हमेशा के लिए विराम ले लेगा। इस बारे में संयंत्र प्रबंधक पीटर ओ'ग्राडी ने कहा कि यह 'भावुक कर देने वाला दिन है'। ब्रिटेन सरकार ने 2030 तक देश के लिए समूची ऊर्जा नवीकरणीय स्रोतों से पैदा करने के प्रयासों में एक मील के पत्थर के रूप में कोयला आधारित बिजली संयंत्र के बंद होने की सराहना की। ऊर्जा मंत्री माइकल शैंक्स ने कहा, संयंत्र का बंद होना एक युग के अंत का प्रतीक है और कोयला श्रमिक वर्षों से देश को बिजली देने वाले अपने काम पर गर्व कर सकते हैं। उन्होंने कहा, कोयला युग खत्म हो रहा है, लेकिन हमारे देश के लिए अच्छी ऊर्जा वाली नौकरियों का नया युग शुरू हो रहा है। संयंत्र के प्रबंधक ने कहा, अब कोयले के बिना ही जीवन चलेगा। ब्रिटेन के ऊर्जा मंत्री माइकल शैंक्स ने कहा, इस संयंत्र ने देश को 140 से ज्यादा साल तक बिजली दी है। एक देश के रूप में हम (गुजरी) पीढ़ियों के प्रति ऋणी हैं। लेकिन उन्होंने कहा, अब शायद कोयले का युग खत्म हो रहा है। हालांकि हमारे देश के लिए नई नौकरियों का एक नया युग अब शुरू हो रहा है।

इजरायल को आत्मरक्षा का अधिकार, हिजबुल्लाह के खिलाफ कार्रवाई को समर्थन: अमेरिका

वाशिंगटन , एजेंसी। इजरायली डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने दक्षिणी लेबनान में हिजबुल्लाह के खिलाफ सीमित, स्थानीय और लक्षित जमीनी सैन्य कार्रवाई शुरू कर दी है। इस बीच अमेरिका ने एक बार फिर यहूदी राष्ट्र का खुलकर समर्थन किया है। इजरायल के रक्षा मंत्री योआव गैलेंट के साथ फोन पर बातचीत में अमेरिकी रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने वॉशिंगटन का समर्थन दोहराया। हालांकि उन्होंने इजरायल-लेबनान सीमा के दोनों ओर नागरिकों की सुरक्षा के लिए एक कूटनीतिक समाधान की जरुरत पर बल दिया।

एक्स पर एक पोस्ट में ऑस्टिन ने कहा, मैंने यह स्पष्ट कर दिया कि संयुक्त राज्य अमेरिका इजरायल के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन करता है। उन्होंने आगे कहा कि दोनों पक्ष सीमा पर आक्रमणकारी बुनियादी ढांचे को नष्ट करने के महत्व पर सहमत हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हिजबुल्लाह इजरायल के उत्तरी समुदायों पर 7 अक्टूबर जैसे हमले न कर सके। अमेरिकी रक्षा सचिव ने इस बात पर भी जोर दिया कि नागरिकों की सुरक्षित घर वापसी सुनिश्चित करने के लिए एक कूटनीतिक समाधान जरुरी है।

ऑस्टिन ने कहा, मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिका ईरान और ईरान समर्थित आतंकवादी संगठनों के खतरे से अमेरिकी कर्मियों, साझेदारों और सहयोगियों की रक्षा करने के लिए अच्छी स्थिति में है और किसी को भी तनाव का फायदा उठाने या संघर्ष का विस्तार करने से

रोकने के लिए दृढ़ है।

अमेरिकी रक्षा सचिव ने कहा, मैंने दोहराया कि यदि ईरान इजरायल के खिलाफ सीधा सैन्य हमला करने का फैसला करता है तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। उन्होंने संघर्ष के विस्तार की स्थिति में इजरायल को समर्थन देने की अमेरिका की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। इससे पहले सोमवार को अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा कि इजरायल ने अमेरिका को सूचित किया कि वह बॉर्डर के पास हिजबुल्लाह के बुनियादी ढांचे पर केंद्रित सीमित अभियान चला रहा है। वाशिंगटन पोस्ट ने अमेरिकी सुरक्षा अधिकारियों का हवाला देते हुए बताया कि इजरायल ने लेबनान में एक सीमित जमीनी अभियान की योजनाओं के बारे में व्हाइट हाउस को सूचित किया है। बता दें 23 सितंबर से, इजरायल ने लेबनान में हवाई हमले तेज कर दिए। शुक्रवार को बेरूत के दक्षिणी उपनगरों में एक महत्वपूर्ण हमले में हुई, जिसमें हिज्बुल्लाह चीफ हसन नसरल्लाह और उनके कई सहयोगी मारे गए। 8 अक्टूबर, 2023 को हिजबुल्लाह ने गाजा में हमास के प्रति एकजुटता जाहिर करते हुए इजरायल पर रॉकेट दागने शुरू किए थे। नवीनतम घटनाक्रम इसी संघर्ष का विस्तार है।

मोसाद का पता लगाने वाले 20 ईरानी एजेंट ही इजरायल के वफादार हो गए, मरवा दिया नसरल्लाह: दावा

येरुशलम, एजेंसी। इजरायल की खुफिया एजेंसी मोसाद के कारनामे अकसर दुनिया को हैरान कर देते हैं। दुश्मन को उसके ही घर में घुसकर मारने से लेकर सालों बाद तक अपना टारगेट याद रखने के लिए मोसाद को जाना जाता है। बीते शुक्रवार को इजरायल ने लेबनान में घुसकर हिजबुल्लाह के शीर्ष कमांडर सैयद हसन नसरल्लाह को मार गिराया था। नसरल्लाह को मार गिराने के पीछे कई कहानियां बताई जा रही हैं कि आखिर कैसे इजरायल ने उसके बारे में पता लगाया। यही नहीं नसरल्लाह के शरीर पर कोई जख्म का निशान तक नहीं है, लेकिन वह मारा गया। अब ईरान के पूर्व राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने बड़ा खुलासा किया है। उनका कहना है कि इजरायल ने ईरान की उस एजेंसी में ही सेंध लगा दी थी, जिसे मोसाद के खिलाफ काम सौंपा गया था। अहमदीनेजाद ने सीएनएन की तुर्की सर्विस को दिए इंटरव्यू में यह दावा किया है। कहा जा रहा है कि ईरान के ऐसे ही एक भेदिये ने इजरायल को नसरल्लाह के पते के बारे में जानकारी दी थी। अहमदीनेजाद ने कहा कि ईरान ने अपने देश में सक्रिय मोसाद के

एजेंट्स का पता लगाने के लिए एक टास्क फोर्स बनाई थी। लेकिन इस ग्रुप में ही इजरायल ने सेंध लगा दी और उन्हें अपने पेरोल पर रख लिया। ये लोग सालों तक डबल एजेंट्स के तौर पर काम करते रहे और ईरान की मदद करने की बजाय उसकी जानकारी ही इजरायल को देते रहे। अहमदीनेजाद का दावा है कि ईरान के खुफिया विभाग में शीर्ष स्तर के भी कुछ लोग इजरायल के साथ जा मिले थे। उनका कहना है कि करीब ऐसे 20 लोग हैं, जो ईरान के लिए काम करने के दौरान इजरायल की मदद करते रहे। ये लोग एक तरह से डबल एजेंट बनकर ईरान को चकमा दे रहे थे। यही नहीं इनकी मदद से इजरायल को ईरान के सारे परमाणु ठिकानों के बारे में पता चल चुका है। इसके अलावा मोसाद ने इन लोगों की ही मदद से हमास के पॉलिटिकल कमांडर इस्माइल हानियेह को तेहरान में घुसकर मार डाला था। यह घटना ईरान के लिए सदमे की तरह थी। खुद बेंजामिन नेतन्याहू ने 2018 में माना था कि उनके पास ईरान के न्यूक्लियर प्रोग्राम और ठिकानों की जानकारी है।

पीछे नहीं हटेंगे, लेबनान पर इजरायल के जमीनी हमले का करेंगे मुकाबला: हिजबुल्लाह

बेरूत, एजेंसी। हिजबुल्लाह के डिप्टी चीफ शेख नईम कासिम ने सोमवार को कहा कि ईरान समर्थित लेबनानी संगठन अपनी लड़ाई में विजेता बनकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि उनका ग्रुप लेबनान पर इजरायली सेना के जमीनी हमले का मुकाबला करेगा। कासिम ने कहा, यदि इजरायल जमीन के रास्ते लेबनान में एंट्री करने का फैसला लेता है, तो रेजिस्टेंस फोर्सेज इन हमलों का मुकाबला करने के लिए तैयार हैं। शुक्रवार देर शाम बेरूत के दक्षिणी उपनगर में इजरायली एयर स्ट्राइक में हिजबुल्लाह चीफ हसन नसरल्लाह की हत्या के बाद संगठन के किसी सीनियर अधिकारी का यह पहला भाषण था। कासिम ने कहा कि अपने शीर्ष नेतृत्व के खात्मे के बावजूद, हिजबुल्लाह अपने रास्ते से पीछे नहीं हटेगा। बता दें लेबनानी ग्रुप को कई देशों ने वैश्विक आतंकवादी संगठन घोषित किया है। कासिम ने कहा, मुझे पूरा विश्वास है कि दुश्मन के ये हमले प्रतिरोध को कमजोर नहीं करेंगे और हम निश्चित रूप से जीतेंगे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि हिजबुल्लाह के नए महासचिव का चुनाव जल्द ही नए कमांडरों के बीच से किया जाएगा। इस बीच, हिजबुल्लाह ने नसरल्लाह की हत्या के बाद नए नेता की नियुक्ति के बारे में मीडिया रिपोर्टों को खारिज करते हुए कहा कि आंदोलन की संरचना के बारे में किसी भी तरह की अटकलों को तब तक खारिज किया जाता है जब तक कि आधिकारिक

घोषणा नहीं की जाती। ईरान के प्रेस टीवी के मुताबिक हिजबुल्लाह ने एक बयान में स्पष्ट किया, महासचिव (सैय्यद हसन नसरल्लाह) की शहादत के बाद हिजबुल्लाह के नेतृत्व में संगठनात्मक प्रक्रियाओं के बारे में कुछ मीडिया आउटलेट्स पर प्रसारित समाचारों को लेकर हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि संबंधित न्यूज का कोई महत्व नहीं है और इस पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। बता दें इजरायल डिफेंस फोर्सेज ने शनिवार को, नसरल्लाह के मारे जाने का ऐलान किया। इसके कुछ घंटों बाद हिजबुल्लाह ने भी अपने नेता की मौत की पुष्टि की। नसरल्लाह, 30 साल की उम्र में 1992 में हिजबुल्लाह का महासचिव बना था। अगले 32 वर्षों में उसने हिजबुल्लाह को न सिर्फ लेबनान बल्कि मध्य पूर्व की एक बड़ी ताकत बना दिया। वह इजरायल का दुश्मन नंबर एक बन गया।

आईएसएस पर पहुंच चुका अंतरिक्षयान, फिर भी फरवरी तक इंतजार, क्यों अटकी सुनीता विलियम्स की वापसी

वॉशिंगटन, एजेंसी। सुनीता विलियम्स को वापस लाने के लिए स्पेसएक्स विमान पहुंच चुका है। इसे इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर खड़ा भी किया जा चुका है। स्पेसएक्स क्रू9 मिशन के दोनों एस्ट्रोनॉट्स निक हेग और एलेक्जेंडर गोर्बूनॉव का वहां पर ग्रैंड वेलकम हो चुका है। यह सब सफलतापूर्वक होने के बावजूद सुनीता विलियम्स को तत्काल वापस क्यों नहीं लाया जा रहा है? जब स्पेसयान वहां पर पहुंच चुका है तो फिर सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की वापसी को फरवरी 2025 तक के लिए क्यों टाला जा रहा है? यह एक बड़ा सवाल है जो तमाम लोगों के जेहन में चल रहा है। असल में इसके पीछे कई वजहे हैं। आइए विस्तार से जानते हैं...

क्रू रोटेशन : इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर क्रू रोटेशन काफी अहम है। नासा ने इसे बहुत ही सावधानी के साथ प्लान किया है। ऐसे में सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की तत्काल वापसी इस रोटेशन पर असर डालेगी। इससे आईएसएस के शिड्यूल पर असर पड़ेगा और वहां स्टाफ की कमी हो सकती है। नासा चाहता है वापस आने से पहले वह मेंटेनेंस से जुड़ी अपनी सभी जिम्मेदारियों को अच्छे से पूरा कर लें।

मिशन में बाधा : सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर फिलहाल आईएसएस पर कई तरह के वैज्ञानिक प्रयोगों में लगे हैं। वह तमाम रिसर्च प्रोजेक्ट्स को भी अंजाम दे रहे हैं। इसके लिए दोनों का चयन उनके अनुभव और विशेषज्ञता को देखते हुए किया गया है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर लंबे समय तक रहने का उनका अनुभव भी अहम फैक्टर है। अगर वो तत्काल वहां से हटते हैं इससे मिशन में बाधा पहुंचेगी।

तैयारी में लगने वाला समय : आईएसएस से धरती के लिए वापस आने से पहले एस्ट्रोनॉट्स को तमाम तरह की तैयारियां करनी पड़ती हैं। अंतरिक्ष और धरती के माहौल में बहुत ज्यादा अंतर है। ऐसे में उन्हें इस बात के लिए तैयार होना पड़ता है कि वापस धरती पर आने के बाद उनका शरीर कैसे रिस्पांस करेगा। इन तमाम चीजों से आसानी से पार पाने के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को वापसी से पहले लंबी तैयारी करनी होती है।

सुरक्षा का पहलू : सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की वापसी में सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा ही बनी थी। ऐसे में नासा जल्दबाजी में कदम उठाकर कोई रिस्क नहीं लेना चाहेगा। दोनों की सकुशल वापसी हो, इसके लिए लंबी तैयारी की जरूरत है। यह देखते हुए कि अंतरिक्ष मिशन काफी अनएक्सपेक्टेड होते हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नवरात्रि में ये सरकार दे रही फ्री में 2 किलो आटा और 1 किलो चीनी

नई दिल्ली। राशन कार्ड धारकों के लिए केंद्र की मोदी सरकार की ओर फ्री राशन योजना चल रही है। इस योजना का लाभ सभी कार्ड धारक लेते हैं। वैसे राशन कार्ड गरीब और जरूरतमंद लोगों का ही बनाया है। अपने देश में अब भी राशन कार्ड से करोड़ों लोग अनाज लेते हैं। यह देखकर पूर्वोत्तर राज्य त्रिपुरा सरकार ने राज्य के लोगों के लिए बड़ा तोहफा दिया है। जिसके तहत राज्य के लोगों राशन के साथ ही कुछ और भी फ्री देने की घोषणा की है। आगामी नवरात्रि को ध्यान में रखकर त्रिपुरा सरकार ने सभी राशन कार्ड धारकों को फ्री में 2 किलो आटा और 1 किलो चीनी देने का ऐलान किया है। इसके साथ-साथ राशन लेने वाले लोगों को दुर्गा पूजा से पहले 500 ग्राम सूजी भी फ्री में दी जाएगी। त्रिपुरा सरकार के तोहफे को लेकर विभाग के अधिकारियों ने बताया कि ये सब सामान पहले भी दिया जाता था। जिसके लिए रियायती दरें ली जाती थीं। हालांकि इस बार त्रिपुरा सरकार की ओर से नवरात्रि को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार फ्री में दे रही है। राज्य सरकार द्वारा किए गए त्रिपुरा सरकार के खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के मंत्री सुशांत चौधरी ने कहा कि हमारी सरकार हर साल सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से सामान रियायती दरों पर उपलब्ध कराती है। लेकिन इस बार सरकार ने विशेष ऑर्डर के तहत लोगों को फ्री में देने लिया है। चूंकि बाढ़ से लोगों को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। यह ध्यान में रखते हुए ये निर्णय लिया गया है। इसके साथ ही उपभोक्ता मंत्री चौधरी ने बताया कि राज्य सरकार जल्दी ही पुराने राशन कार्डों को बदलकर स्मार्ट कार्ड में बदलेगी। इसके तहत सभी को नया राशन कार्ड जारी होगा।

साहिबगंज में एनटीपीसी एमजीआर रेलवे ट्रैक को बम से उड़ाया

साहिबगंज। साहिबगंज में एनटीपीसी एमजीआर रेलवे ट्रैक को बदमाशों ने बम से उड़ा दिया है। इसमें ट्रैक का 470 सेंटीमीटर टुकड़ा क्षतिग्रस्त हो गया है। ब्लास्ट इतना जोरदार था कि रेलवे ट्रैक का हिस्सा 39 मीटर दूरी जा गिरा। ब्लास्ट के बाद ट्रैक में 770 सेंटीमीटर का गैप आ गया। वहीं 3 फीट गहरा गड्?ढा हुआ है। मौके पर रेलवे और पुलिस के बड़े अधिकारी पहुंचे हुए हैं। घटना लगभग रात के 12 बजे की है। घटना के बाद कोयला लोड गाड़ी पोल संख्या42/2 के पास खड़ी है। वहीं घटना के संबंध में रेलवे नाइट गार्ड जीतेंद्र कुमार शाह ने बताया कि मेरी ड्यूटी इसी लाइन में शाम चार बजे से रात 12 बजे तक रहती है। मैं ड्यूटी में ही था। कई बार की जांच के दौरान में रात 10 बजे तक लाइन में किसी तरह की कोई हलचल नहीं थी। रात 12 बजे के करीब धमाके जैसी आवाज आई। हालांकि इस लाइन में पहले कभी इस तरह की घटना नहीं हुई तब लगा कि टायर फटा होगा। मेरी ही लाइन में घटना घटी इसका पता नहीं चल सका। ड्यूटी खत्म कर मैं घर चला गया। सुबह फोन पर जानकारी मिली की ऐसी घटना हुई है।

मणिपुर में नगा समुदाय के दो पक्षों के बीच गोलीबारी...3 लोगों की मौत

नई दिल्ली। मणिपुर के उखरुल जिले में नगा समुदाय के दो पक्षों के बीच गोलीबारी हुई। इसमें 3 लोगों की मौत हुई और 10 से ज्यादा घायल हैं। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 163, 2023 की उप-धारा 1 के तहत इलाके में निषेधाज्ञा लागू कर दी है। अगले आदेश तक लोगों के घरों से निकलने पर रोक है। पुलिस ने बताया कि दोनों पक्ष नगा समुदाय के हैं, लेकिन हुनफुन और हंगपुंग नाम के दो अलग-अलग गांव हैं। दोनों पक्ष एक ही जमीन पर दावा करते हैं। स्वच्छता अभियान के तहत विवादित जमीन की सफाई को लेकर दोनों गुटों के बीच हिंसा हुई। इलाके में असम राइफल्स को तैनात किया गया है। दूसरी तरफ, चुराचांदपुर जिले के लीशांग गांव के पास अज्ञात लोगों ने एक प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन के टाउन कमांडर की गोली मारकर हत्या कर दी। मृतक की पहचान जिले के कपरंग गांव के निवासी सेखोहाओ हाओकिप के रूप में की गई।

ईरान पर इजराइल के घातक पलटवार से सहमी दुनिया

नई दिल्ली। मिडिल ईस्ट में चल रहे गंभीर तनाव के बीच, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ती तनातनी ने चिंता को बढ़ा दिया है। हाल ही में, इजरायल ने एक ऑपरेशन कर हिज्बुल्लाह प्रमुख को मार गिराया, जिसके बाद ईरान ने बदला लेने की धमकी दी थी। मंगलवार देर रात, ईरान ने इजरायल पर सैकड़ों मिसाइलें दाग दीं। इस हमले ने पहले से ही अस्थिर मिडिल ईस्ट की स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया है। दोनों देशों के बीच बढ़ता तनाव केवल इजरायल और ईरान तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर होगा। सोशल मीडिया पर भी मुद्दे को लेकर गंभीर चर्चाएं हो रही हैं। कई लोग ईरान के साथ खड़े हैं, जबकि अन्य इजरायल के समर्थन में हैं। इस बीच, कुछ लोग लंबी जंग की आशंका को लेकर चिंतित हैं। वहीं ईरान के मिसाइल हमले के बाद, इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि ईरान ने मिसाइल दागकर बहुत बड़ी गलती की है। उन्होंने सुरक्षा कैबिनेट की बैठक में कहा कि ईरान को इसके परिणाम भुगताना होगा। वहीं ईरान के हमले के बाद, दुनिया भर से मिली-जुली प्रतिक्रिया आ रही हैं। अमेरिका ने हमले की कड़ी निंदा कर इजरायल को सैन्य सहायता की पेशकश की है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इजरायल को हरसंभव मदद देने का आश्वासन दिया है। वहीं, यूरोपीय यूनियन और संयुक्त राष्ट्र ने तनाव को कम करने और शांति बहाल करने की अपील की है। कुछ अरब देशों ने इस हमले के बाद क्षेत्र में संभावित बड़े संघर्ष की चिंता जाहिर की है, जबकि कुछ ने ईरान के समर्थन में खड़े होने का संकेत दिया है।

ईरान और इजराइल के बीच जंग के असर... कई दिग्गज एयरलाइंस कंपनियों ने बदले रुट

- कई एयरलाइंस कंपनियों ने रद्द कर दीं उड़ानें

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान और इजराइल में तनाव बढ़ने का असर दुनियाभर में दिख रहा है। इस बीच विमानन क्षेत्र गहरा असर पड़ा है। मिडिल ईस्ट में जंग के बीच कई दिग्गज एयरलाइंस कंपनियों ने अपने रास्ता बदल लिया है या फिर सस्पेंड फ्लाइट्स की डेडलाइन को आगे बढ़ा दिया है। पहले इजराइल-फिलिस्तीन, फिर इजराइल और हिजबुल्लाह और अब इजराइल और ईरान के बीच संघर्ष ने लुफ्थांसा से लेकर अमीरात तक की उड़ानों को प्रभावित किया है। एअर इंडिया ने भी दोनों देशों के बीच बढ़ते संघर्ष पर चिंता जाहिर की है।

वहीं कई एयरलाइनों ने इजराइल और लेबनान के लिए अपनी उड़ानों के निलंबन को आगे बढ़ा दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, लुफ्थांसा, केएलएम, अमीरात और स्विस एयरलाइंस सहित टॉप एयरलाइनों ने इजराइल, ईरान और लेबनान के लिए अपनी उड़ानों के निलंबन की घोषणा की है।

युद्ध बढ़ने की आशंका के चलते डच एयरलाइन केएलएम ने कहा है कि कंपनी ने क्षेत्र की नाजुक स्थिति को देखकर साल के अंत तक तेलअवीव के लिए अपनी सभी उड़ानें सस्पेंड कर दी हैं। रिपोर्ट में एयरलाइंस के प्रवक्ता ने हवाले से जानकारी दी गई है। बता दें कि अगस्त में केएलएम एयरलाइंस ने ऐलान किया था कि इजराइल के लिए सभी उड़ानें 26 अक्टूबर तक निलंबित की गई हैं, लेकिन अब इस डेडलाइन को बढ़ा दिया गया है।

वहीं जर्मन एयरलाइन लुफ्थांसा ने कहा कि वह 30 नवंबर तक बेरूत, 31 अक्टूबर तक तेल अवीव और 14 अक्टूबर तक तेहरान के लिए उड़ानें निलंबित कर रही है। इससे पहले दुबई की अमीरात एयरलाइंस ने गुरुवार की इराक, ईरान और जॉर्डन की उड़ानें कैंसिल की हैं और बेरूत की उड़ानों का निलंबन 8 अक्टूबर तक बढ़ाया है। कुवैत एयरलाइंस ने कुछ रूट्स को चेंज किया है, डेस्टिनेशन टाइमिंग पर असर पड़ा है। एयरलाइन ने कहा है कि यह जरूरी सुरक्षा उपायों के तहत किया गया फैसला है। ईरान एयर, इराकी एयरवेज, बहरीन स्थित गल्फ एयर और दोहा स्थित कतर एयरवेज ने भी अगली सूचना तक बेरूत के लिए सभी उड़ानें निलंबित कर दी हैं। वहीं एयर अरेबिया ने बेरूत के लिए अपनी सभी उड़ानें सस्पेंड कर दी हैं। फिलाय दुबई ने अपनी दुबई-बेरूत उड़ान को 7 अक्टूबर तक के लिए रद्द कर दिया है।

रॉयल जोर्डन ने मौजूदा स्थिति के बीच लेबनान की राजधानी के लिए उड़ानें निलंबित की हैं। आईटीए एयरलाइंस इटली ने तेल अवीव की उड़ानों के निलंबन को 31 अक्टूबर तक बढ़ा दिया है। ब्रिटिश एयरलाइन ने तेल अवीव की उड़ानों को 7 अक्टूबर तक रद्द कर दिया है। एयर फ्रांस ने भी घोषणा की कि उसकी पेरिस-तेल अवीव और पेरिस-बेरूत उड़ानें 8 अक्टूबर तक रद्द हैं।

इस बीच भारत की एअर इंडिया ने कहा कि हम मिडिल ईस्ट में जारी संघर्ष पर बारीकी से निगाह रखे हुए हैं और सुरक्षा जोखिमों का मूल्यांकन जारी है। कंपनी ने कहा है कि चाहे वह मिडिल ईस्ट हो या फिर रूट नेटवर्क के अन्य हिस्से सुरक्षा के लिए जरूरी एडजस्टमेंट किया जाएगा।

विदेशों में साइबर गुलाम बने 30 हजार भारतीय, सबसे ज्यादा पंजाब के लोग

नई दिल्ली। अलग अलग देशों में टूरिस्ट वीजा पर गए करीब 30 हजार भारतीय वापस नहीं लौटे हैं। इसमें सबसे ज्यादा लोग पंजाब-3,667, महाराष्ट्र- 3,233, तमिलनाडु राज्य-3,124 से हैं। अन्य राज्यों से जाने वाले लोगों की संख्या काफी कम है। कंबोडिया, थाइलैंड, म्यांमार और वियतनाम में विजिटर वीजा पर जाने वाले भारतीयों को लेकर आशंका है कि इन्हे साइबर गुलाम बना लिया गया है और साइबर क्राइम कराया जा रहा है। गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाली आप्रवासन ब्यूरो ने एक डेटा तैयार किया और उसमें इसकी जानकारी मिली है कि कंबोडिया, थाइलैंड, म्यांमार और वियतनाम में विजिटर वीजा पर जनवरी 2022 से मई 2024 के बीच 73,138 यात्री भारत से यात्रा पर गए थे। इसमें से 29,466 भारतीय अभी तक वापस लौटे नहीं हैं। इसमें 20-39 आयु वर्ग के लोगों की संख्या करीब आधी यानी 17,115 है। ये जानकारी रिपोर्ट से मिली। इसमें 90 परसेंट लोग पुरुष हैं।रिपोर्ट्स के मुताबिक, आशंका जताई जा रही है कि इन लोगों पर दबाव बनाया जा रहा है और भारत में रह रहे लोगों के साथ साइबर ठगी करने का दवाब बनाया जा रहा है। इन लोगों को नौकरी का लालच देकर साइबर गुलाम बनाया है। सूत्रों का हवाला देते हुए बताया है कि केंद्र सरकार की एक उच्च स्तरीय समिति ने अब सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों सत्यापन करने और इन लोगों की डिटेल्स लेने का निर्देश दिया है। बताते चलें कि हाल ही भारत में साइबर ठग के कई केस सामने आए हैं, जहां लोगों को अलग-अलग झांसे देकर लूटा जा रहा है। साइबर गुलामी के तहत काम करने वाले लोगों पर दवाब बनाया जाता है। इसमें इंटरनेट पर मौजूद प्लेटफॉर्म के जरिए लोगों को टारगेट किया जाता है। भारतीय होने की वजह से कई लोग हिंदी और स्थानीय भाषा बोल सकते हैं। इस तरह के झांसे में कई लोग फंस जाते हैं, उसके बाद वे अपने लाखों रुपये गंवा देते हैं।

मोदी-शाह की सोच में रोजगार देना नहीं, केवल भाषण देना है: खड़गे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बीच बयानबाजी का अब एक नया दौर शुरू हो गया है, जिसमें दोनों नेताओं ने एक-दूसरे पर तीखे बाण चलाए हैं। यह विवाद उस समय बढ़ गया जब खड़गे ने जम्मू-कश्मीर में एक चुनावी सभा के में कहा था कि वह तब तक जिंदा रहेंगे जब तक पीएम मोदी को सत्ता से नहीं हटाया देंगे।

अब कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने फिर से केंद्र सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि मोदी-शाह की सोच में रोजगार देना नहीं, बल्कि केवल भाषण देना, फोटो खिंचाना और फीता काटना शामिल है। उन्होंने यह भी बताया कि जम्मू में सरकारी विभागों में 65 फीसदी पद खाली हैं और स्थानीय लोगों को नौकरियों से वंचित किया जा रहा है। यह बढ़ते आरोप-प्रत्यारोप आने वाले समय में राजनीतिक माहौल को और गरमा देंगे, जिससे यह स्पष्ट है कि दोनों दल अपने-अपने एजेंडों को आगे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं।

खड़गे ने जम्मू-कश्मीर में आयोजित सभा में मोदी की नीतियों पर निशाना साधते हुए कहा था पीएम मोदी जम्मू-कश्मीर आकर युवाओं के भविष्य के लिए झूठे आंसू बहा रहे हैं। असलियत ये है कि पिछले दस सालों में पूरे देश के युवाओं को अंधकार में धकेल दिया गया है। उन्होंने बेरोजगारी के हालिया आंकड़ों का जिक्र करते हुए कहा कि यह पिछले 45 सालों में सबसे ज्यादा है और इसके लिए मोदी जिम्मेदार हैं।

इस बयान पर अमित शाह ने खड़गे के बयान को घटिया और शर्मनाक बताया था। शाह ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा था- खड़गे ने अपने भाषण में न केवल पीएम मोदी को घसीटा, बल्कि कांग्रेस के नेताओं और अपनी पार्टी के खिलाफ भी शर्मनाक बातें कहीं। शाह ने कहा कि इससे पता चलता है कि कांग्रेस के नेताओं में मोदी के प्रति कितना डर और नफरत है। शाह ने आगे कहा कि जहां तक खड़गे के स्वास्थ्य की बात है, पीएम मोदी उनके दीर्घायु और स्वस्थ रहने की प्रार्थना करते हैं। हम सभी प्रार्थना करते हैं कि वह 2047 तक विकसित भारत का निर्माण होते देखें।

पान और गुटखा खाकर रोड पर थूकने वालों की अखबार में छापनी चाहिए फोटो, स्वच्छता अभियान कार्यक्रम में नितिन गडकरी ने दिया आइडिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पान मसाला, गुटखा खाने और सड़क पर थूकने वालों से निपटने के लिए एक अनोखा आइडिया दिया। गडकरी ने कहा कि पान, मसाला और गुटखा खाकर सड़क पर थूकने वालों की फोटो खींचकर अखबार में छपवाई जाए। गडकरी गांधी जयंती पर स्वच्छ भारत को लेकर नागपुर नगर निगम द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। इसके अलावा, गडकरी ने सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने वालों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि हमारे देश के लोग बहुत होशियार हैं, चॉकलेट खाते हैं और उसके रैपर सड़कों पर फेंक देते हैं और वही व्यक्ति जब विदेश जाता है तो चॉकलेट का रैपर अपनी जेब में रखता है, विदेश में अच्छा व्यवहार करता है और यहां सड़क पर फेंक देता है।

गडकरी ने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि वह आजकल जब भी चॉकलेट खाते हैं तो घर पहुंचने के बाद चॉकलेट का रैपर फेंक देते हैं. पहले उसे शराब पीने के बाद उसका रैपर बाहर फेंकने की भी आदत थी। पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने गांधी जयंती को स्वच्छ भारत के प्रतीक दिवस के रूप में समर्पित किया है। हर साल, सरकार और अन्य राज्य संस्थान इसके आसपास स्वच्छता अभियान (स्वच्छता अभियान) या कार्यक्रम आयोजित करते हैं। पीएम मोदी आज पंडारा पार्क के एक स्कूल पहुंचे और झाड़ू लगाकर इलाके में सफाई की। देशभर में ऐसे कई आयोजन किये गये. लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी संसद परिसर में स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया।

10 प्र. सीटें आवंटित की जाएंगी, फडणवीस के वोट जिहाद वाले बयान के बाद अजित पवार ने मुस्लिमों को दिया आश्वासन

मुंबई। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव से पहले एनसीपी-एपी प्रमुख अजीत पवार ने महायुति सीट बंटवारे के बाद अल्पसंख्यकों को 10 प्रतिशत टिकट देने की घोषणा की। महाराष्ट्र के बीड में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए पवार ने यह घोषणा की। अपने संबोधन के दौरान पवार ने कहा कि इस बार होने वाले चुनाव के संबंध में मैं अपने अल्पसंख्यक समुदाय को बताना चाहता हूं कि महायुति के सीट बंटवारे में एनसीपी को जो भी सीटें मिलेंगी, उनमें से 10 फीसदी मैं अल्पसंख्यक समुदाय को दूंगा। अपना बयान देते हुए उन्होंने बीजेपी विधायक नीतीश राणे पर निशाना साधते हुए कहा कि मैंने यह फैसला लिया है। मैं सभी जातियों और धर्मों को मानने वाले शिव-शाहू फुले का समर्थक हूं। डि?टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने सोमवार को दावा करते हुए कहा कि हालिया लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र की 48 लोकसभा सीटों में से 14 में वोट जिहाद देखा गया। पवार ने नाम लिए बिना कहा कि कुछ 'बेलगाम बयानवीर' अलग धर्म, संप्रदाय और समुदाय के खिलाफ बयान देते हैं अलग, यह सही नहीं है। उनका बयान ऐसे समय आया है जब उनके साथी उपमुख्यमंत्री और भाजपा नेता देवेंद्र फड़नवीस ने यह सुनिश्चित किया कि महायुति वोट जिहाद के कारण 48 में से 14 सीटें हार गई। जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव नजदीक आ रहे हैं, महायुति में गठबंधन सहयोगी सीट बंटवारे पर बातचीत कर रहे हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को मुंबई के सह्याद्रि गेस्ट हाउस में अजित पवार और प्रफुल्ल पटेल के साथ करीब एक घंटे तक बैठक की. गौरतलब है कि 288 सीटों वाली महाराष्ट्र विधानसभा के लिए नवंबर में चुनाव होने हैं। चुनाव आयोग ने हाल ही में कई हितधारकों से मुलाकात की और बाद में घोषणा की कि विधानसभा का कार्यकाल 26 नवंबर को समाप्त हो रहा है और चुनाव उससे पहले पूरा करना होगा।

प्रशांत किशोर ने की जन सुराज पार्टी लॉन्च, कार्यक्रम में पहुंचे दिग्गज

*** मनोज भारती को बनाया कार्यकारी अध्यक्ष**

पटना (एजेंसी)। राजनीतिक पार्टियों के लिए चुनावी रणनीतिकार का काम करते-करते खुद राजनीतिक मैदान में उतरने वाले प्रशांत किशोर ने पटना में बुधवार को एक कार्यक्रम में अपनी नई पार्टी को लॉन्च किया है। उन्होंने अपनी राजनीतिक पार्टी का नाम जन सुराज रखा है और इसके कार्यकारी अध्यक्ष मनोज भारती को बनाया है। अब इससे बिहार के राजनीतिक गलियारे में क्या बदलाव आता है, यह देखने वाली बात होगी।

पार्टी लॉन्च कार्यक्रम में प्रशांत किशोर ने राजनीतिक भविष्य से जुड़ी बातें भी कीं। उन्होंने पटना के वेटनरी कॉलेज ग्राउंड में बुधवार को जमा हुए लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि बहुत दिन से जन सुराज अभियान चलाया जा रहा है। पिछले करीब दो-ढाई सालों से यह चल रहा है। ऐसे में सभी लोग पूछ रहे कि हम पार्टी कब बनाएंगे। इसलिए आज आप सभी यहां पार्टी बनाने के लिए जुटे हैं। भगवान को धन्यवाद देना चाहिए, कि आज चुनाव आयोग ने आधिकारिक तौर पर जन सुराज को जन सुराज पार्टी के तौर से स्वीकार कर लिया है। इसी दौरान पूरे जोश के साथ पीके ने मौजूद जनता से सवाल किया- नाम ठीक है? यदि आप सभी मना करते हैं तो चुनाव आयोग के पास फिर से आवेदन दिया जाएगा, आप बताएं जन सुराज पार्टी नाम ठीक है? सभी ने अप्रूव कर दिया। इसी के साथ पीके का दावा, था कि मैदान में 5 हजार से ज्यादा नेता आए हुए हैं। इस पार्टी लॉचिंग कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र प्रसाद यादव, राजनयिक से नेता बने पवन वर्मा और पूर्व सांसद मोनाजिर हसन समेत अनेक मशहूर हस्तियां मौजूद थीं। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष के तौर पर मनोज भारती का नाम आगे बढ़ाया गया है, जो पदभार ग्रहण करने के साथ ही पार्टी के कार्यों को आगे बढ़ाने का काम शुरु करेंगे।

चुनाव से पहले राम रहीम को पैरोल... बाहर आते ही डेरे का सियासी खेल शुरू

हिसार (एजेंसी)। हरियाणा चुनाव के बीच डेरा सच्चा सौदा मुखी राम रहीम बुधवार सुबह 6 बजे जेल से रिहा हो गया। राम रहीम को 3 शर्तों के साथ 20 दिन की पैरोल मिली है। जिसमें राजनैतिक कार्यक्रम न करना भी शामिल है।

हालांकि राम रहीम के बाहर आते ही डेरे का सियासी खेल शुरू हो गया है। राम रहीम की पैरोल की खुशी में डेरे ने हरियाणा के हर ब्लॉक में नाम चर्चा रखी गई है। जो बुधवार और गुरुवार तक चलेगी। 5 अक्टूबर को प्रदेश में वोटिंग होगी है। माना जा रहा है कि नाम चर्चा के दौरान ही डेरे की तरफ से राम रहीम का संदेश श्रद्धालुओं तक पहुंचाया जाएगा कि उन्हें अंदरखाने किसे सपोर्ट करना है।

यह बात अलग है कि डेरा हमेशा चुनाव में किसी एक पार्टी को सपोर्ट करने से इंकार करता है, लेकिन पैरोल के समय को देखकर विरोधी इस लेकर सवाल उठाते रहते हैं। अगर डेरे के वोटर एकतरफा हुआ तब उन सीटों पर इसका असर पड़ सकता है, जहां 2 उम्मीदवारों और खासकर भाजपा-कांग्रेस के बीच कांटे का मुकाबला है।

चुनाव आयोग के सूत्रों का कहना है कि हरियाणा सरकार से कहा गया है कि अगर राम रहीम आचार संहिता या शर्तों का उल्लंघन करता है, तब पैरोल तुरंत कैंसिल होगी। हरियाणा में 5 अक्टूबर को वोट डाले जाएंगे। रिजल्ट 8 अक्टूबर को आएगा। इसी वजह से राम रहीम की पैरोल को चुनाव से जोड़कर देखा जा रहा है। हरियाणा की 36 सीटों डेरे से जुड़े श्रद्धालुओं का वोट बैंक है। यौन शोषण और मर्डर केस में राम रहीम रोहतक जेल में सजा काट रहा है। पैरोल के दौरान राम रहीम उत्तर प्रदेश के बागपत स्थित बरनावा आश्रम में रहेगा।

राजस्थान और मध्य प्रदेश को खून से रंगने की धमकी... दोनों राज्यों की पुलिस अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के महाकाल मंदिर सहित कुछ रेलवे स्टेशनों को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। राजस्थान में हनुमानगढ़ रेलवे स्टेशन सुपरिटेंडेंट को धमकी भरा पत्र मिला है। पत्र में मध्यप्रदेश-राजस्थान के रेलवे स्टेशन, महाकाल मंदिर सहित धार्मिक स्थलों में विस्फोट करने की बात लिखी है। धमकी देने वाले ने खुद को जैश-ए-मोहम्मद का जम्मू-कश्मीर एरिया कमांडर मोहम्मद सलीम अंसारी बताया है। धमकी के बाद उज्जैन एसपी प्रदीप शर्मा ने बताया कि मीडिया के जरिए सूचना मिली है। हम सतर्कता बरत रहे हैं। राजस्थान पुलिस से संपर्क कर कार्रवाई होगी। महाकाल मंदिर के आसपास पुलिस ने डॉग स्क्वॉड के साथ सर्चिंग शुरू की है।

राजस्थान के हनुमानगढ़ रेलवे स्टेशन सुपरिटेंडेंट नागेंद्र सिंह को पीले रंग का लिफाफा मिला। पत्र डिप्टी सुपरिटेंडेंट जगत नारायण के नाम से था। सिंह ने बताया कि पत्र में राजस्थान और मध्य प्रदेश को खून से रंगने की बात लिखी थी। पत्र जीआरपी को सौंप दिया है। इसमें जम्मू-कश्मीर में जिहादियों की हत्या का बदला लेने के लिए स्टेशनों और उज्जैन महाकाल को बम से उड़ाने की धमकी लिखी है।

लेटर में लिखा है

हे खुदा मुझे माफ कर, जम्मू-कश्मीर में मारे जा रहे हमारे जिहादियों की मौत का बदला जरूर लिया जाएगा। हम ठीक 30 अक्टूबर को जयपुर, जोधपुर, अलवर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, बूंदी, उदयपुर, बीकानेर, जयपुर मंडल, मध्य प्रदेश के भी रेलवे स्टेशन, 2 नवंबर को उज्जैन महाकाल मंदिर, जयपुर के कई धार्मिक स्थानों, रेलवे स्टेशन और सैन्य अड्डों को बम से उड़ा दिया जाएगा। राजस्थान और मध्य प्रदेश को खून से रंग दिया जाएगा। जैश-ए-मोहम्मद, खुदा हाफिज।

3500 सीढ़ियां नंगे पैर चढ़े तिरुपति मंदिर पहुंचे डिप्टी सीएम पवन कल्याण

तिरुपति। आंध्र प्रदेश के श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर (तिरुपति मंदिर) के प्रसादम (लड्डुओं) में जानवरों की चर्बी मामले में डिप्टी सीएम पवन कल्याण की 11 दिन की प्रायश्चित दीक्षा जारी है। इस बीच पवन ने प्रायश्चित के तहत 1 अक्टूबर से तीन दिनों के लिए तिरुपति मंदिर यात्रा पर हैं। वे 3 अक्टूबर तक चप्पल या जूता नहीं पहनने वाले है। उन्होंने 1 अक्टूबर की देर रात तिरुमाला पहुंचने के बाद तिरूपति के अलीपिरी के रास्ते करीब 3500 सीढ़ियां नंगे पैर चढ़ीं। फिर गायत्री निलयम गेस्ट हाउस में रात गुजारी। पवन बुधवार को श्रीवारा में तपस्या की दीक्षा लेने वाले है। वह 3 अक्टूबर को दीक्षा खत्म होने के बाद वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने वाले है। बुधवार को पवन कल्याण की दोनों बेटियां भी तिरुपति पहुंची। छोटी बेटी पोलिना अंजनी कोनिडेला ने मंदिर जाने से पहले भगवान वेंकटेश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा की घोषणा पत्र पर साइन किए। मंदिर के नियमों के अनुसार, गैर-हिंदुओं और विदेशियों को मंदिर में जाने से पहले देवता में विश्वास की घोषणा पर साइन करना होता है। पोलीना पवन कल्याण और उनकी तीसरी पत्नी अन्ना लेजनेवा की बेटी हैं। पोलीना और उनके अपने भाई मार्क प्रवासी भारतीय हैं। पवन कल्याण की पहली पत्नी रेनू देसाई से हुई बेटी आद्या भी पोलीना के साथ मंदिर गईं।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

राजपूत शराब माफिया को पुलिस ने गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई शुरूकी, शराब का जखीरा भरवाने और उसे लेने आने वाले सुरेंद्रसिंह राजपूत को वॉन्टेड घोषित

हरदयालसिंह नारायणसिंह राजपूत और खुशालसिंह मोतीसिंह राजपूत को गिरफ्तार किया

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत जिले के पलसाणा पुलिस ने बलेश्वर गांव के पास से शराब से भरा एक टेम्पो पकड़ा। पुलिस ने जब टेम्पो की जांच की, तो उसमें ऊन के बोरों के पीछे छिपाकर विदेशी शराब का जखीरा ले जाया जा रहा था। पुलिस ने टेम्पो, शराब और अन्य सामान सहित कुल २०.७३ लाख रुपये का माल जब्त किया और दो लोगों को गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई शुरूकी है।

बूटलेगर शराब की तस्करी के लिए नए-नए तरीके आजमाते रहते हैं। इसी क्रम में सूरत जिले में पुलिस ने ऊन के बोरों की आड़ में ले जाई जा रही शराब को पकड़ा। पलसाणा पुलिस की टीम ने बलेश्वर गांव की ओर जाने वाले कट से विदेशी शराब से भरा टेम्पो जब्त किया। पुलिस ने जब टेम्पो की जांच की, तो उसमें ऊन के बोरों की आड़ में छिपाकर शराब का जखीरा ले जाया जा रहा था। पुलिस ने ९,६२,४०० रुपये की भारतीय १ लाख रुपये के ऊन से भरे बोरे और पकड़े गए दो आरोपियों से दो मोबाइल फोन सहित कुल २०,७३,७३० रुपये का सामान जब्त किया है। इस मामले में पुलिस ने हरदयालसिंह नारायणसिंह राजपूत (उम्र ३०) और खुशालसिंह मोतीसिंह राजपूत (उम्र ३१) को गिरफ्तार किया है, जबकि शराब का जखीरा भरवाने और उसे लेने आने वाले सुरेंद्रसिंह राजपूत को वॉन्टेड घोषित किया गया है। पुलिस ने इस मामले में कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी

वेसु रामलीला मैदान पर आज से होगा राम की लीलाओं का मंचन

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत, रामलीला महोत्सव वेसू स्थित एसएमसी के रामलीला मैदान में होने जा रहा है. पत्रकार परिषद में रामलीला की जानकारी देते हुए अध्यक्ष रतन गोयल और महामंत्री अनिल कुमार अग्रवाल ने बताया कि इस वर्ष ३ से १३ अक्टूबर तक महोत्सव मनाया जायेगा. समय रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक रहेगा. रामलीला का मंचन व्रंदावन के रसाचार्य श्री त्रिलोक चंद शर्मा की मंडली के द्वारा होगा. मंडली में लगभग ३५ व्यक्ति होंगे जिसमे रामलीला कलाकार, वाद्य यन्त्र बजाने वाले साजिंदे आदि शामिल रहते है. विशेष आकर्षण इस वर्ष भी राम बारात का आयोजन किया जा रहा है जो ६ अक्टूबर शाम ४ बजे श्री मेहंदीपुर बालाजी मंदिर न्यू सिटी लाइट से प्रारंभ होकर राजहंस जियोंन,केनाल रोड़ से होते हुए व्हाइट लोटस स्कूल पानी की टंकी वेसू के पास से होते हुए सोमेश्वरा इंक्लेव से रामलीला मैदान रिलायंस मार्केट के सामने पहुंचेगी. जगह जगह भगवान की भक्तों द्वारा आरती स्वागत सोसायटी में रहने वाले परिवारों के द्वारा होगा. बारात में बैंड बाजा, रोशनी, झूमर आगरा की प्रसिद्ध चलती फिरती विभिन्न प्रकार की झांकिया आदि के साथ प्रभु रामजी अपने भाईयों सहित रथ पर दूल्हा बन हमें दर्शन देते हुए रामलीला मैदान पहुंचेगे. १२ अक्तूबर को शाम ६ बजे रावण, कुंभकरण, मेघनाद का दहन होगा वीआईपी रोड पर हाई टेंशन पोल के आगे एसएमसी के बस डिपो प्लॉट पर भव्य आतिशबाजी के साथ होगा. १३ अक्टूबर को रामराज्यभिषेक एवम भीष्म प्रतिज्ञा की लीला पश्चात इस वर्ष की रामलीला विराम लेगी. पत्रकार वार्ता के दौरान उपाध्यक्ष सुशील बंसल, मंत्री गिरधारी अग्रवाल, लीला मंत्री अंशु पंडित, प्रल्हाद अग्रवाल, सुदर्शनभाई, किशन अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, रवि गर्ग समेत पदाधिकारी उपस्थित रहे.

महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर सूरत शहर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर सूरत शहर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। खासतौर पर स्वच्छता पखवाड़े की शुरुआत एक अभियान के रूप में की गई। शहर के विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर गया। सूरत नगर निगम द्वारा आज चोक इलाके में गांधी प्रतिमा के पास सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न धर्मों के लोग एकत्रित हुए, और धर्मगुरुओं ने भाईचारे का संदेश दिया। इसके साथ ही देश के विकास में सब मिलकर कैसे आगे बढ़ सकते हैं, इस पर भी चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में नगर आयुक्त सहित अन्य अधिकारी भी सामूहिक स्वच्छता शपथ ली गई। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी विशिष्ट व्यक्तियों ने सफाई कर्मियों का अभिवादन किया। सफाई अभियान के दौरान डुमस बीच पर ६० सुपरवाइजर, ४५० से अधिक सफाई कर्मी और १५०० से अधिक नागरिकों के साथ २ डोर-टू-डोर गाड़ियाँ, ६ ई-वाहन और अन्य वाहन शामिल थे। २० टीमों द्वारा इस सफाई अभियान को संचालित

सफाई अभियान चलाया गया। खासकर सूरत के लोगों के पसंदीदा घूमने-फिरने के स्थान डुमस बीच पर बड़े स्तर पर सफाई का काम किया गया। सूरत नगर निगम द्वारा आज चोक इलाके में गांधी प्रतिमा के पास सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न धर्मों के लोग एकत्रित हुए, और धर्मगुरुओं ने भाईचारे का संदेश दिया। इसके साथ ही देश के विकास में सब मिलकर कैसे आगे बढ़ सकते हैं, इस पर भी चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में नगर आयुक्त सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद थे। सभी धर्मगुरुओं ने गांधी जयंती के अवसर पर विश्व शांति के लिए एक साथ प्रार्थना की। गैर-सरकारी संगठनों और नागरिकों द्वारा किया गया। इस अभियान के दौरान १७९ किलोग्राम प्लास्टिक और १७०० किलोग्राम अन्य कचरा एकत्रित किया गया।

"कल्पना की उड़ान" एवं "फिट-युद्ध" का हुआ आयोजन

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत, अग्रवाल विकास ट्रस्ट द्वारा जयंती महोत्सव में बुधवार को युवा शाखा द्वारा "फिट युद्ध" का आयोजन डुमस स्थित कंसल फ़ार्म पर किया गया. ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रमोद पोद्दार ने बताया की सुबह सात बजे से आयोजित कार्यक्रम में प्रतियोगितों में अपने शारीरिक कौशल का प्रदर्शन किया. ट्रस्ट की महिला शाखा द्वारा सुबह नौ बजे से "कल्पना की उड़ान" ड्राईंग प्रतियोगिता का आयोजन सिटी-लाईट स्थित महाराजा अग्रसेन पैलेस के पंचवटी हाल में किया गया. इस प्रतियोगिता में ३५० से ज्यादा प्रतियोगियों ने भाग लिया. इस प्रतियोगिता मे अलग-अलग आयू वर्ग के बच्चों ने ड्राइंग, क्राफ्टिंग, गुल्लक पेंटिंग, पेपर बैग पेंटिंग और कॉफी पेंटिंग करके अपना हुनर दिखाया.

सोशल शार्क टैंक में प्रस्तुत हुए नये सामाजिक आइडिया

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत, अग्रवाल विकास ट्रस्ट युवा शाखा द्वारा रविवार को जयंती महोत्सव में सोशल शार्क टैंक एवं "आहुति" नाटक का आयोजन किया गया. सिटी-लाईट स्थित महाराजा अग्रसेन पैलेस में दोपहर दो बजे से सोशल शार्क टैंक का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में विभिन्न टीमों ने अपने इनोवेटिव आइडियाज़ प्रस्तुत किए, जिनका मकसद समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना था. शाम साढ़े सात बजे से "आहुति" नाटक का मंचन किया गया. नाटक में बच्चों को उनके सपनों को पूरा करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए, और उन्हें केवल स्कूल एवं कॉलेजों में रैंक और अंकों के पीछे भागने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए का शक्तिशाली सामाजिक संदेश दिया गया. आयोजन में ट्रस्ट के पदाधिकारी, युवा एवं महिला शाखा के अनेकों सदस्य उपस्थित रहें.

आदमी के विचार, व्यवहार और वाणी में रहे अहिंसा के भाव

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत,जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ हो चुका है. इस सप्ताह के दूसरे दिन अर्थात् बुधवार को अहिंसा दिवस के रूप में समायोजित किया गया. महावीर समवसरण में उपस्थित जनता को अहिंसा यात्रास के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि अनासक्त साधक शब्द और स्पर्श को सहन करता है. सहिष्णुता मानवता का एक गुण है और वह साधना भी

होती है. मन अथवा शरीर के विपरित स्थिति आने पर भी सम भाव रखते हुए उसे सहन कर लेना एक अच्छी साधना होती है. शब्द भी कई बार ऐसे आते हैं, जो कटु होते हैं, अपमानकारक होते हैं. साधु को भी कटु शब्द सुनने को मिल सकते हैं. वहां साधु को शब्दों को सहन करने का प्रयास करना चाहिए.

जीवन में बातचीत का काम पड़ता रहता है. बातचीत में कटु शब्द भी प्रयोग हो सकता है, हो सकता है कोई झूठा आरोप भी लगा सकता है. साधु को वैसे शब्दों और उसे सहने का प्रयास करना चाहिए.

दो अक्टूबर है. अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का दूसरा दिन अहिंसा दिवस के रूप में समायोजित हैं. अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का यह सात दिन अणुव्रत के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है. अणुव्रत से जुड़ी हुई संस्थाएं अहिंसा, नैतिकता व नशामुक्ति का यथासंभव प्रचार-प्रसार करती रहें. आदमी यह प्रयास करे कि उसके जीवन में अहिंसा का प्रभाव बना रहे. आदमी की भाषा में, विचार में, व्यवहार में अहिंसा का भाव बना रहे. अहिंसा एक प्रकार की भगवती है, माता है, जीवनदाता है. अहिंसा मानों सभी प्राणियों को अभय बना देती है. अहिंसा शौर्य, वीर्य और बलवती हो, इसका प्रयास करना चाहिए.

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने नवरात्र में नौ दिनों होने वाले आध्यात्मिक अनुष्ठान की जानकारी देने के उपरान्त प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के संदर्भ में उपस्थित जनता को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया. 'सादर स्मरण शासनमाता भाग-२' शासनश्री साध्वी कल्पलताजी द्वारा लिखित पुस्तक को जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया. आचार्यश्री ने इस संदर्भ में पावन आशीर्वाद प्रदान किया. मुनि उदितकुमारजी ने आयम्बिल अनुष्ठान के विषय में जानकारी दी. अहिंसा दिवस के संदर्भ में सूरत के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी. मुम्बई के घाटकोपर उपाश्रय के ट्रस्टी श्री मुकेशभाई ने अपनी अभिव्यक्ति दी. आचार्यश्री ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया.

"फन विद फ्लेवर्स" कुकिंग कॉम्पिटिशन का आयोजन

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत,अग्रवाल विकास ट्रस्ट महिला शाखा द्वारा अग्रसेन जयंती महोत्सव में सोमवार को च्फन विद फ्लेवर्सज्ज कुकिंग कॉम्पिटिशन का आयोजन सिटी-लाईट स्थित महाराजा अग्रसेन पैलेस के पंचवटी हॉल में किया गया. महिला शाखा अध्यक्षा सोनिया गोयल ने बताया कि आयोजन में १०० से ज्यादा प्रतियोगियों ने भाग लिया. इस प्रतियोगिता मे प्रतियोगियों को चार तरह के व्यंजन मॉकटेल, स्टाटर, सलाद और डेजर्ट तैयार करने थे और उसे एक फन एलिमेंट डालकर प्रस्तुत करना था. इस मौके पर महिला शाखा की रुचिका रुंगटा, सरोज अग्रवाल, प्रीति गोयल, अनुराधा जालान, कुसुम सराफ, सुषमा दास्का, अनीता केडिया सहित महिला शाखा की अनेकों सदस्या उपस्थित रहीं.